

DPN 6290

Title : १) कुशाण्डिकर्म KUSAṆḌI KARMA
2) कलशाचर्चन विधि KALASĀRCANA VIDHI

Run. No. 6981

Cat. No. 35

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 18 X 8

Folios 86

Lines (in a page) 6/7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Ratna Shankara Sharmma

Author / translator

Scribe / donor

रत्नशङ्करशर्मा / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 948

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□. ॐ ब्रह्मरो नमः ॥ ॥ अथ कुशाण्डिकर्म लिख्यते ॥

△ इति कात्यायनोक्तं कुशाण्डिकर्म सम्पूर्णं ॥ शुभं ॥

P. T. Q.

ॐ नमो ब्रह्मरो ॥ ॥ अथ कलशाच्यन विधिर्लिख्यते ॥ नृपां यजमान नोसिचके ॥
धुनि ऋषु चपाय ॥

इति कलशाच्यनं सम्पूराम् ॥ ॥ शुभम् ॥ श्रेयोस्तु ॥ संवत् १४८ आश्विन
शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार तस्मिन्दिने श्री तेजः शंकरस्यात्मज श्रीरत्नशंकर शर्मणा
लिखितमिति सम्पूराम् ॥ ॥ शुभम् ॥

अथ कलशाया वेद ॥ पञ्चगव्य साधन ॥ इति शिवमतपञ्चगव्य साधनं ॥

5



5

10

15

20

१ॐ वृक्षानमः ॥ अथ कृत्वा लिखत ॥ सूर्यार्घ्यं
त्वा प्रादुर्भीकृत्वा ॥ गमयतः आसंकात्रयत ॥ ॐ कात्रदग
कनसामो न्यार्घ्यं वागुसाधयत्वा ॥ कृत्वा लनां स्मान्नीसिंघा ॥ निल
कं विधातुं यूप्यं ॥ ॥ यूप्यं कृत्वा मादाय ॥ ॐ महो न्नात्र
हस्तमात्रलीलाय कृत्वा ॥ हस्तमात्रलीलाय कृत्वा ॥ हस्तमात्रलीलाय कृत्वा
द्विषः ॥ ॥ हस्तमात्रलीलाय कृत्वा ॥ हस्तमात्रलीलाय कृत्वा ॥ हस्तमात्रलीलाय कृत्वा

[illegible]

पुवलिपूजाम् अस्मिन् यज्ञे वरुण मरु ॥ हनून्नु विघ्नसंघाता
 न् प्रयच्छन्नु मम प्रितान् ॥ हतवल्गु च न विधो अङ्ग गन्धादि ॥
 वलिविष्णुर्जन ॥ स्तान् द्विषतु ॥ ॥ लाजादिद्वयर्ज ॥ ॐ नमो
 विष्णवे स्वामी ॥ ४ पादि लृ लृ धा गि न ॥ नदा गो क मू र क्षमा ॥
 गय गी म नु ल कृ लु नि नी द क्ष ॥ पत्रि स मू र्ज ॥ ॐ यद्वा द वरु
 ॐ न द वा ल श्रु मा व य ॥ अग्नि म्मा त स्मा द न सा वि श्व म्भू च ॥

15
10
त्व० हस० ॥ ॥ उयलयनं ॥ ॐ मानसाकतनयमानश्रयः
विमानाग्मवृमानाभ्रवृषनीत्रियः ॥ मानावीनाबुदराभिना
वधीर्दविष्मकः सदमित्वाहवामह ॥ ॥ उयलयनं ॥ ॐ त्वा
मिद्विहवामहसातीवाजस्यकायवः ॥ त्वीवृषुसिन्दुसत्यतिः
नरत्त्वाकाशसर्वतः ॥ ॥ अयुक्ता ॥ ॐ तत्त्वायामिवन्मः
भवन्दमानसदाग्मस्यजमानाहविर्दिः ॥ अहठमानावन
लहवाध्वनूग० समानआयू० पुमायी० ॥ ॥ गयगोद्वन

5
नी ॥ ॐ पप्रिमनदद्वि० दद्वि० नउरुन० उरुन० लम० ॥
आग्मनयापप्रिमात्रवा दद्वि० पिहृदवता उरुन० सामद
वानीप्राजायत्यंगुमधुमाः ॥ ॥ अयुक्तं निधाय ॥ ॐ अयु
क्तं वसमीगर्कः स्वयमवइता लनः ॥ नरवाकुरुह्यैकत्वाः
गयगीविन्यसद्वृक्षः ॥ ॥ नकधन्यपुदयनी ॥ ॐ सदस्य
निमरुतं प्रियमिन्दुस्यकाम्यं ॥ समीमधमयासिष० स्वाहा ॥

15
सिधुक्कमस्यमृतमसिधमनामासि॥ प्रियन्वानामनाधृष्टं
दवयजनमसि॥ ॥ **किस्तुगीकृणुवदुर्न**॥ ॐ त्वयविष्टदा॥
॥ **वागीधनीपूजनी**॥ ॐ युक्तनमनसावयंदवस्यसविष्टुः
सर्व॥ **स्तुग्ययशक्री**॥ ॥ **लक्ष्मीमागधस्कापनी**॥ ॐ हिन
व्यवर्धुहनिनीसुवर्णुनजतसजावर्द्धाहिनमयीलक्ष्मीजात
वदाममावह॥ तौ रं आवहजातवदालक्ष्मीमल्पगमिनी ॥

10
यजमानस्यहस्तमकाष्टदाययत॥ ॐ त्वीवर्द्धुसिन्दुसत्यतिन
नस्त्वाकाष्टासर्वतः॥ सत्त्वन्नश्चिरवेदाहस्तधृष्टुयामहस्तवानाः
॥ **अदिवः**॥ ॥ **वाक्मन्त्रनकाष्टुहर्ष**॥ ॐ धीपादेजलनास्युद्धर्ष
॥ **मजगुजयत**॥ ॥ **काष्टनिधाय**॥ ॐ ॐ धनास्वागतः
हिमायुमकः॥ **समिधामहि**॥ वयस्वकावयस्वतः॥ सहस्वकः॥ सह
स्वर्ग॥ ॥ **अग्नसपत्नदंरुनमदध्वासा**॥ **अदार्प्य**॥ **किगावसास्वसिर्गया**
नमसीय॥ सकयर्ष्यकंडुर्द्धयाग्राहर्ग॥ वन्दनपूष्ययज्ञायवीर्यनि

15
10
ॐ ॥ का **सु** **कु** **पु** **पू** **ज** **न** ॥ ॐ **सु** **लो** **का** **य** २ ॥ ॐ **सु** **व** **लो** **का** **य** २
॥ ॐ **सु** **लो** **का** **य** २ ॥ ॐ **म** **ह** **लो** **का** **य** २ ॥ ॐ **ज** **न** **लो** **का** **य** २ ॥ ॐ **त** **पा** **ः**
लो **का** **य** २ ॥ ॐ **स** **य** **लो** **का** **य** २ ॥ ॐ **मृ** **त** **व** **स्स** **मृ** **ता** **वृ** **ध** **मृ** **तु** **स्स** **स्स**
मृ **ता** **वृ** **ध** ॥ ॐ **पु** **ता** **म** **धू** **पु** **ता** **वि** **ना** **जा** **ना** **म** **का** **म** **धू** **चा** **अ** **द्वी** **य** **ः**
मा **ना** ॥ ॥ **त** **ता** **अ** **ग्नि** **मा** **दा** **य** ॥ **अ** **ग्नि** **मृ** **द्वा** **दि** **व** ॥ **क** **कु** **त्प** **ति** ॥
पृ **थि** **वा** **अ** **य** **म्** ॥ **अ** **या** ॥ **न** **ता** ॥ **सि** **जि** **व** **ति** ॥ **कृ** **ण** **प** **दा** **ल** **य** **न्** ॥
अ **ग्नि** **प** **दा** **ल** **य** ॥ **आ** **त्मा** **ना** **द** **दि** **क्ष** **ा** **स्सा** **य** ॥ ॥ **अ** **ग्नि** **नि** **र्म** **य** **न्**

॥ ॥ ॐ **न** **दा** **ह** **र्ण** **व** **ल** **ग** **ह** **र्ण** **व** **ेषू** **वा** **मि** **द** **म** **ह** **र्ण** **व** **ल** **ग** **मृ** **त्ति** **ना** **मि** **य** **म्**
मि **श्रा** **य** **म** **मा** **त्या** **नि** **व** **र** **वा** **न** **द** **म** **ह** **र्ण** **व** **ल** **ग** **मृ** **त्ति** **ना** **मि** **य** **म्** **स** **मा** **ना** **य**
म **स** **मा** **ना** **नि** **व** **र** **वा** **न** **द** **म** **ह** **र्ण** **व** **ल** **ग** **मृ** **त्ति** **ना** **मि** **य** **म्** **स** **व** **न्धू** **य** **म** **स**
व **न्धू** **नि** **व** **र** **वा** **न** **द** **म** **ह** **र्ण** **व** **ल** **ग** **मृ** **त्ति** **ना** **मि** **य** **म्** **स** **जा** **ता** **य** **म** **स** **जा** **ः**
ता **नि** **व** **र** **वा** **ना** **त्क** **र्मा** **कि** **ना** **मि** ॥ ॥ **व** **लि** ॥ ॐ **अ** **धू** **वा** **च** **द** **धि** **व** **का**
प्र **थ** **मा** **द** **वा** **लि** **य** **कृ** ॥ **अ** **हो** **प्र** **स** **र्वी** **श्रु** **म** **य** **स** **र्वी** **प्र** **थ** **मा** **पु** **ध** **न्या** **ध**
ना **ची** ॥ **प** **रा** **सू** **व** ॥ ॥ **य** **व** **ति** **ला** **क** **त** **न** **क** **वा** **दा** **इ** **ति** **रु** **यं** **व** **पु** **त** **न**

॥ ॐ कृष्णदात्रयस्वाहा ॥ ॐ कृष्णदमर्गिषहि नो मिदूयम
नाथं गच्छुनिषवाह ॥ अग्निपत्रियमवहिः दियत ॥
उपसर्गन ॥ ॐ ॐ हेवायमितनाजगवदादवत्याहविवहेवुपः
जानन ॥ ॥ अग्निमयदली ॥ आस ॥ ॐ नो हृदयाय नमः ॥ ॐ
नो हिनसस्वाहा ॥ ॐ नूतिरवायवयट ॥ ॐ नंकववायट ॥ ॐ नोन
गुरयायवोषट ॥ ॐ न४ अम्मायट ॥ ॥ अम्मायट ॥
ॐ न४ अम्मायट ॥ अम्मायट ॥ ॥ ॐ नंकववायट ॥ कः

वचनावगुन्तन ॥ ॥ वक्रिगयती ॥ ॐ वन्धननायविद्वहः
अनकात्रितायधीमहि ॥ तन्नावक्रिः पुषादयात ॥ ॥ धनु
मूदयाः मृतीकय ॥ ॐ अग्निमृषियवमानः पावजगुः यः
नाहितः ॥ तमीमहमहागय ॥ अग्निआस ॥ ॐ नूतजावन
वेन्दवअतिनकीकनानलगयस्वान्मानविष्मृष्टिः अम्मा ॥
यान्नालिः अविचिकयत ॥ ॥ ततोऽग्निगृहीत्वा ॥ ॐ अन्वः
निनूषसामयमददन्नेहानियथमाजगवदा ॥ अनूसूय

तम ॥ पूर्व भूदपातनी ॥ ॐ ॐ अस्वास्त्या वायवस्क दवावशस
 विताषा प्य अशु (य) षतमाय कर्मलः ॥ आयाय धम ग्गु ॐ नुः य
 रा गीपुजा वती न लमी वा अय अमावस्क न ॐ ॥ माद्य ॥ ॐ सा धु
 वा अस्मिन् (ग) पतो स्यात व क्री यो रमानस्य पतु न्याहि ॥ दक्षिण
 भूदपातनी ॥ ॐ अग्ना आयाहि वीतय गृहा (ग) हव्य दातय
 ॥ निहाता तस्य वर्हि वि ॥ यष्टिम भूदपातनी ॥ ॐ ॥ ननादः
 वीन रिष्टय आयात वनु वीतय ॥ ॐ आ न रिष्ट वनु नः ॥ उ न भू

[illegible]

धिपतय २॥ ॐ नमो न्यायखे जहस्ता यप्रतासनायनादसाधि
 पतय २॥ ॐ वरुणायवाहाहस्तायमकनासनायजलाधिपतः
 य २॥ ॐ वायव्यध्वजहस्तायमृगवाहनायपवनाधिपतय २॥
 ॐ कवनायगदाहस्तायभ्रवाहनायधनाधिपतय २॥ ॐ
 ॐ लामनायविभूतहस्तायवृषरासनायसर्वहताधिपतय
 २॥ ॐ अधसर्वकहस्तायकूर्मासनायपाताल्लाधिपतय २॥
 ॐ इन्द्रायकमलुहस्तायहंसासनायसुगर्भाधिपतय २ ॥

ॐ सुगर्भय २॥ ॐ मरुतोय २॥ ॐ यामालाय २॥ ॥ इति विध
 हार्म ॥ नमः ॥ ॐ कानवाहाहा ॥ नमः ॥ दृष्टीरुहयात् ॥ ॐ यथाह
 दव ॥ पुदि ॥ मनुसर्वा ॥ पूर्वो हजात ॥ सउगह भूक ॥ सनवजान
 ॥ सजनिष्टमान ॥ प्रत्यह जनास्मिष्टति सर्वतो मुख ॥ ॥ अग्निः
 मूर्त्वीकमर्णी ॥ ॥ कृष्णायपीतयु ॥ धुनिमलुहदयं लिखत् ॥
 ॐ बुध ॥ ॐ दमासनं २॥ ॐ यणीताय ॐ दमासनं २॥ ॐ स्वो
 स्मासनाय २॥ ॐ त्रिवनासनं ॥ ॥ वसोपुजर्म् ॥ ॐ हिनय

गर्हः समवर्तता यत्तस्य जातः पतिव्रत आसीत् ॥ सदा धनपुः
१५ शिवी आमुत मां क मोद वाय द विषा वि रं म ॥ ॥ प्रणीत पूजनं
॥ ॐ ॐ द विष्णु विवकु मरुत निदध पद म ॥ समुद्र म सा पाण्डु म
न ॥ ॥ ततः प्रणीत प्रकालन ॥ पुनर्य ॥ ॥ कृणु नमः मार्जन ॥
अस्य कर्ण ॥ ॐ द व स्यात्वा स विरुः प सव न्निना द्वा इत्यपि पुष्पा द सा र्थी ॥
॥ ॐ प्रपूज्य न दः प्रपूज्य अना तया निरु क न दानि रूपा
अना तयः ॥ पुनर्य ॥ ॥ ॐ अनिलिता सिम पत्त दिवा जि न त्वा

वाज आये समाधि ॥ समाज नै ॥ ॥ ॐ आया हि स्या मया शु
व स्मान उरु द धा न न ॥ म ह न य च द स ॥ या वः गिव त मा नः
स स स्या त ग य ग द न ॥ उ री ती त्रिव मा त न ॥ त स्या अ नै ग मा म
५ वा य स्या द या य जि न्त्व थ ॥ आ प ज न य थ म व न ॥ आ पः पू न र्ण ॥
त गः व क्रा पू ज न ॥ ॐ वृक्ष ल न मः ॥ ॐ पुजा प त य न मः ॥ ॐ स वः
स्या द व स्या ॥ ॐ वृक्ष य ज्ञाने प थ म पु न स्ता दि सी म तः स न र्वा वि न
आ वः स वृ क्षा उप मा अ स्य वि षा ॥ स त द्य आ नि म स त द्य वि वः ॥

[illegible]

पञ्चमीयागद्विमानः कल्पनी ॥ कृष्णदक्षिणवक्त्रास्त्रायनं ॥ ॥
 ॐ विष्णुनाटमसिविष्णुः ॥ गुरुस्त्राविष्णुः ॥ सूर्यनसिविष्णुर्धुवासि
 ॥ वसुवमसिविष्णुर्वत्वा ॥ कृष्णदक्षिणवक्त्रास्त्रायनं ॥ ॥ पूर्ववः
 सूर्यनं ॥ ॐ वसुवमसिविष्णुर्वत्वा ॥ ॐ प्रजापतय २ ॥ ॐ सर्वथादवस्था
 नमः ॥ ॐ वसुवमसिविष्णुर्वत्वा ॥ ॥ प्रजापतय २ ॥ ॐ विष्णुर्वत्वा ॥ ॐ
 प्रजापतय २ ॥ ॐ वसुवमसिविष्णुर्वत्वा ॥ ॐ प्रजापतय २ ॥ ॐ वसुवमसिविष्णुर्वत्वा ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कथं स ह सा काय पादुका ॥ अथ य
अथ सत्त्वा नाद न र्वाक न नमः ॥ अथ यूनव ॥ ॥ कथं न
पमि र्वा न र्वा ॥ ॐ कथं न र्वा ॥ अथ यूनव ॥ ॥ कथं न
या सत्त्वा नाद न र्वा ॥ यथ २ विधि मन्त्र कल मन्त्र ॥ ॥ न
नार्थ पदा साधन ॥ दक्षिण पूषा हाऊन कमलुत्तु मवि र्वा
नानि ॥ य विरुक्ता दक्षिण ॥ अथ अथाली च नृणां ली सत्त्वा
ऊन वृत्त उपयमान वृत्त ॥ नानेन वृत्त ॥ अथ निलत वृत्त यन ॥

वृत्त वृत्त पाद उद्वल ॥ पूर्व दक्षिण इयन् ॥ कथं न र्वा ॥ अथ यूनव
दिवा नादि दक्षिण वनावा ॥ ॥ ॥ ॐ दक्षिण वनावा ॥ अथ यूनव
न ॥ ॐ दक्षिण वनावा ॥ अथ यूनव ॥ ॥ कथं न र्वा ॥ अथ यूनव
मृग ॥ अथ अग्नि अली र्वा न र्वा ॥ ॥ ॐ य विरुक्ता व
वृत्त म विरुक्ता ॥ अथ यूनव ॥ अथ अली र्वा न र्वा ॥ अथ यूनव
न र्वा ॥ अथ यूनव ॥ अथ अली र्वा न र्वा ॥ अथ यूनव
अथ यूनव ॥ अथ अली र्वा न र्वा ॥ अथ यूनव ॥

15
क० निष्कृष्टाभूतागतयः॥ पुनर्येव॥ ॥ ॐ अ० नि० लि० ता० सि० स० प० त्रः
दि० हा० जि० न० त्वा० वा० ऊ० य० स० म्मा० र्जि० ॥ स० म्मा० र्जु० न० ॥ ॥ ॐ म० ही० ना०
प० या० सि० व० र्चा० दा० अ० सि० व० र्चा० भ० द० हि॥ व० रु० स्या० सि० क० नी० न० क० थ० इ०
र्दा० अ० सि० व० इ० र्मा० द० हि॥ आ० अ० स्ता० ल्या० मा० र्जु० नि० धा० य॥ ॥
त० त० ए० नू० वि० धा० न० ॥ ॐ अ० न० म० सि० धि० नू० हि० द० वा० न्वा० य० त्वा० दा०
ना० य० त्वा० वा० ना० य० त्वा॥ दी० द्या० म० नू० य० सि० ति० मा० य० य० अ० नू० वा० व०
स० वि० ता० हि० न० अ० या० वि० ॥ पु० ति० गृ० त्वा० त्व० कि० दु० ल० पा० लि० ना० च० इ० य०

5
त्वा० म० ही० ना० प० या० सि॥ त० धु० ल० य० ह० र्ण॥ ॥ ॐ अ० दि० न्ये० ना० स्त्राः
सि० वि० श्रा० व० र्था० स्य० र्जु० त्वा० द० वृ० न० त्वा० च० इ० या० व० प० य० मि॥ त० धु० ल०
नि० त्री० द० र्ण॥ ॥ ॐ अ० (ग्र० स० नू० र० सि० वा० वा० वि० स० र्जु० न० द० व० वी० त० य०
त्वा० गृ० क्रा० मि॥ उ० दू० र० व० ल० त० धु० ल० नि० धा० य॥ ॥ ॐ व० ह० द्या० वा० सि० वा०
न० स्य० न्य० ॥ स० ॐ द० द० व० र्था० दे० वि० ॥ मू० ल० मा० दा० य॥ ॥ ॐ ग० मी०
य० स० ग० मि० ग० मी० य॥ ह० वि० कृ० द० हि० ह० वि० कृ० द० हि॥ मू० ल० उ० दू० र० वः
ल० स्का० य॥ ॥ ॐ कृ० कृ० दा० सि० म० र्जु० कि० कृ० ॐ य० मू० र्जु० मा० व० द० स्त्रेः

काण्डं सिवदिष्टदः ॥ यत्रूपा लिपतिर्मुदमाना भूस्त्राः ॥ सनः ॥ स्व
 धया चरन्ति ॥ यत्रा पुनानिधुना यत्र नृपतिश्चोलाका मुमुदाः
 त्वस्माच्छातिः ॥ कृष्णनावञ्जातिर्न ॥ लेद्वयार्थः ॥ अंगमनहवर्ण
 ॥ ॥ ॐ गम्वा दस्य मृगीषहवसामंदानमन्धसः ॥ भूतिवत्स
 नस्वसुनभूधनव ॥ ॐ दं गार्हिर्नवामह ॥ पथ्यग्नि कनर्ण ॥
 भूवदवीयनर्ण ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ अस्त्रद्वी ॥ ॥ ॐ गानात्र
 मिल्द ॥ पतर्ण ॥ ॥ ॐ ॐ द्वात्वा ॥ भूवत्वा द्वावना ॐ न ॥

द्विनाचत्रुमानाठनं ॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि
दं लपविर्गुलसूर्यस्य नमिनि ॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि
वनं ॥ संज्ञवनं वे ॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि
लपविर्गुलसूर्यस्य नमिनि ॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि
अम् ॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि
॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि
॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि
॥ ॐ सवित्रस्तुष्टाय सवउत्पुनाम्नासि

15
काग्रयरूपतिष्ठसुखं यरूपतिष्ठिवयुर्वं ॥ गुणाद्वाचनी ॥ ॥
ॐ यथा ॐ न्यावृणीतवृक्षद्वयं यमिन्द्रमवृणीध्वं वृक्षद्वयः
धादिकास्तु ॥ नूदिगगनयं ॥ ॥ ॐ अग्नयत्वाशुष्टं पादाम्य
नीयामास्यात्वाशुष्टं पादामि ॥ अग्निपादनी ॥ ॥ ॐ वृक्षाः
स्यात्वनस्याग्नयत्वाशुष्टं पादामिवदिनसिवहिषत्वाशुष्टं
पादामिवहिनसिग्र्यात्वाशुष्टं पादामि ॥ सर्वपादनी ॥ ॥
ॐ अथाहदवः ॥ यदिगगनसर्वाः ॥ पूर्वाहजारः ॥ सउगर्ह अकः ॥ स

5
अवजातः ॥ सऊनिष्प्रामानः ॥ प्रत्यङ्गनासिष्ठतिसर्वतामूखः ॥
अग्निर्गुणियुदक्षिणीहयः ॥ ॥ ॐ अदित्येवाच नमसि विः
प्रमुयास्यूर्ध्वमुदसंत्वास्तु ॥ मिस्त्रासस्तु दिवत्या ॐ रूपगय
स्वाहा ॥ ॐ अवनपतय स्वाहा ॥ ॐ दत्तानीपतय स्वाहा ॥ ॥ (नया
दकंप्रणीतनिधाय ॥ सपदिगुं प्रज्ञानखर्भं च प्रणीतनिधाय ॥
पादनीदक्षिणत आशमूरुनतः ॥ प्रकृष्टुवाचुर्न ॥ मूलादि

अथार्क ॥ ॥ वन्दनादिपूजनं ॥ ॐ वन्द्य ॥ २ ॥ ॐ विष्णु वन्द्य ॥
 ॐ नूदाय ॥ ॥ आशुस्फालीपूजनं ॥ ॐ वन्द्य ॥ २ ॥ ॐ विष्णु
 वन्द्य ॥ ॐ लक्ष्मी ॥ २ ॥ ॐ धूम्रसिद्धिर्धूम्रधूम्रं ॥ ॥ गतः उपयमः
 नकुलीमादाय ॥ ॥ अग्नौर्दक्षक्रियानात्ररुत ॥ ॐ यानिकल्पना
 यस्वा ॥ ॐ देवस्य यानि न सिद्धं देवस्य नाति न सिद्धि ॥ मात्वा हि
 १ सीमा माहि १ सी १ स्वाहा ॥ धूम्रं ॥ ॥ ॐ गर्गाधनायः

स्वाहा ॥ ॐ गं ह्रीं श्रीं स्याध्यानां गं ह्रीं वनस्य गीर्वाणां ॥ गं ह्रीं विश्व
स्यात्तु गं स्यात्तु गं ह्रीं श्रीं पामसि स्वाहा ॥ ॥ यूं ध्रुवनाय स्वा
हा ॥ ॐ स्वस्ति पन्था मनुचन मस्तु र्था यचन्द्र मसाविव ॥ यूनर्द्धता
ध्रुता जानता सै गव महि स्वाहा ॥ ॥ सीमका नयनाय
स्वाहा ॥ ॐ माहिर्हर्मा ॥ ॥ ॐ जातकर्म स्वाहा ॥ ॐ
काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कर्मस्मै स्वाहा धिमा धीताय स्वाहा

मनंप्रजापतयस्वाहा चिरं विस्मृताया दिव्ये स्वाहा दिव्ये मध्ये
स्वाहा दिव्ये समृद्धी कार्ये स्वाहा समस्तये स्वाहा समस्तये पावः
कार्ये स्वाहा समस्तये देहये स्वाहा प्रभू स्वाहा प्रभू प्रयथ्याय
स्वाहा प्रभू ननन्धियाय स्वाहा त्वष्ट्र स्वाहा त्वष्ट्र रुनी पाथ
स्वाहा त्वष्ट्र यूरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे नित्यः
पाथ स्वाहा विष्णवे नित्ये विष्णवे स्वाहा ॥ ॥ सयत्नक

नामय स्वाहा ॥ ॐ त्वमग्ने ॥ ॥ निष्कुमनाय स्वाहा ॥
ॐ यज्ञायज्ञावाभून्नयगिनागिनाचदक्षस ॥ प्रपद्यममृ
तजातदक्षसं प्रियं मित्रं नमसि स्य ॥ ॥ अरुणवनाम
कनय स्वाहा ॥ ॐ प्राणाय स्वापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा च
क्षुषे स्वाहा ॥ ॐ आशय स्वाहा वाच स्वाहा मनस स्वाहा ॥ ॐ रु
द्राय स्वाहा ॥ ॐ या रुद्रलिप्ता ॥ ॐ अन्नप्राणनायः

स्वाहा ॥ ॐ अन्नपत ॥ ॥ पूर्ववदाचमनीस्वाहा ॥ ॐ दुपदादिः
वगुमुचानः ॥ स्विन्नः स्वातामलादिव ॥ पूर्णपविशुल वाअमापः
मुन्धकुमनसः स्वाहा ॥ ॥ ब्रूताकनलयस्वाहा ॥ ॐ मूर्धनः
दिवा अन्नमिष्टिश्चावन्धननमृतागतमग्निः ॥ कविः समुज
मतिथिः जनानामासन्नापाकुंजनयकदवाः स्वाहा ॥ ॥ कर्ण
दायस्वाहा ॥ ॐ रुद्रैकः कर्णः ॥ मृग्यामदवा रुद्रैः पण्यमादहः
व्यजगाः ॥ स्विन्नः ॥ गेमुद्रवाणससकनूतिर्वाणमहिदवाहि

तं यदायुः स्यात् ॥ ॐ वृत्तवन्धनाय स्वाहा ॥ ॐ वृत्तं कृत्वा वृ
 त्तं कृत्वा ग्निर्वैष्णवग्निर्यज्ञावनस्पतिर्यज्ञः ॥ देविन्धिर्यमनाम
 हसूनुतीकामलिर्यववर्धायकं वाहसं सुतीर्थनाभूसदसं
 स्वाहा ॥ ॥ गायत्रीपदानाय स्वाहा ॥ ॐ वृत्तं नदी कामा प्रातिदीः
 दया प्रातिदक्षिणी ॥ दक्षिणं पृष्ठमा प्रातिपद्यं सत्यमा प्रातस्त्वा
 हा ॥ ॥ ॐ मंगलामा वनाय स्वाहा ॥ ॐ उद्गमं वनं पाणिमसं
 दवाधमं विमंभुमं प्रथमं ॥ अथ वयमादिच वृत्तं कवा नागसा

15
अदितयन्ममस्वाहा ॥ ॐ समावर्तनाय स्वाहा ॥ ॐ आरुक्
ननरुमावर्तमानानि वलयनमर्तमर्तुच ॥ हिनय्यनसविगान
(थनादवाजातिरुवनानि पन्थनस्वाहा ॥ ॐ विवाहाय स्वा
हा ॥ ॐ नैपत्नी हिननूगर्तमदवाः पूरुर्गोहृतिरुतवाहिन (पुः ॥
नार्कगृगानाः सुहृत्सुलाकर्तुगीयपृष्ठभूतिनाचनदिवः स्वा
हा ॥ ॐ वरु (पुः स्वाहा ॥ ॐ शुभ्रकयजामहसूगन्धिपूष्टिवः
10
द्वनम् ॥ उर्ध्वानूकमिववन्धनान्मृत्वा मृदीयमामृतात् ॥ शुभ्रक

यजामहसूगन्धियतिवदनं ॥ उर्ध्वानूकमिववन्धनान्मृत्वा मृदी
यमामृतात् स्वाहा ॥ ॐ मातापितृविसर्जनाय स्वाहा ॥ ॐ मा
नवपूरुष्टथिवीपूत्राश्रमग्निश्चयानावतानूवा ॥ गाम्नि (पुः द
वैर्भृरुलिः सविदानः पूजापतिर्द्विग्वकर्मविमूर्तपुस्वाहा ॥
5
॥ ॐ सम्मुखीकनय स्वाहा ॥ ॐ नृषाहदवः पदि (मनू
वः पूष्टाहजातः सडगर्तभूतः ॥ सनवजातः सजनिष्प्रमानः प
त्यदुर्गनासिष्ठतिसर्वनामुखः स्वाहा ॥ ॐ शुभ्रनजाशाय

15
स्वाहा ॥ ॐ विश्वतश्च द्रुतविश्वतामूखा विश्वतावाद्रुतविश्वतसा
तु ॥ सैवाद्रुसीधमति सैयतु र्गोवाहमीजनयन्दवनक ॥ स्वाहा ॥
॥ ॐ प्रमिषाय स्वाहा ॥ ॐ मनोद्रुतिरुवताना अस्यावहस्य
तिश्रुमिमननात्वनिष्टयरु ॥ समिमिदध्मपु ॥ विश्वदवास
ॐ हमादयकामा ॐ प्रमिष स्वाहा ॥ ॥ रगाः ॥ नञ्जानम ॥
ॐ मन्वातूर ॥ पदीफाचि ॥ गकिहसाद्रुतासैन ॥ ॐ शुभकात्रादेव
कुचः पद्मलित्यावकयूनि ॥ सफवर्गुरुवरुकि का शुवधुकद

तय

5
दि (लकन) ॥ स्वाहापत्नीस्तितावाम आग कुलमनिकानक ॥
॥ ॐ अग्नयश्चानयुर्व्य ॥ स्वाहा ॥ ॥ ॐ समिधामिन्दुवः
स्तुतधुनैर्वाधयतातिथि ॥ आस्मिहवाशुहातन ॥ ॥ अ
हादससमिधमादाय ॥ ॥ ॐ गदवाग्निमदादिभ्यस्तु
युस्तइवन्दुमा ॥ तदवधुर्वे दुमता आप ॥ सप्रजापति ॥ स्वा
हा ॥ वागर्गशुक्रात ॥ ॐ का ॥ ॐ कात्रल स्वाहा ॥ ॐ काप्रलीर्
निधाय ॥ शुवा (यपे) लव निधाय ॥ वामहस्तं च तिस्रवीशु

[illegible][illegible]

लोकपालार्चनं ॥ पुनः ॥ हामयुद्धार्चनं ॥ कृष्णाय नमः ॥
 नमस्तुते लिखत ॥ ॐ शिष्याय ॥ ॐ वसुधाय ॥
 ॐ दवागमय ॥ ॐ दिगम्बराय ॥ ॐ विदिगम्बराय ॥ ॐ स्वर्गाय ॥
 ॐ मर्त्याय ॥ ॐ वातालाय ॥ ॐ अग्निाय ॥ ॐ वायुाय ॥ ॐ
 सुखाय ॥ ॐ सूर्याय ॥ ॐ आगीश्वराय ॥ ॐ महाआगी
 श्वराय ॥ ॐ शिष्टाया ॥ ॐ देव्याय ॥ ॐ आश्विन्याय ॥ ॐ
 हामदेव्याय ॥ ॥ पत्नीयैः पूज्यैः जलिनन्दयात् ॥ ॐ नमः

[illegible]

१५
 १०
 यममहात्म्यं दृष्ट्वा धनं आस्तात् ॥ अग्नवर्हर्षं वर्द्धय मवर्गात्वा
 आवाप धिवा अर्द्धं आवाप धिवा स्त्रिंशं रुद्रं वयं ॐ नमो अ
 नह विद्याह स्वाहा संश्रुति वा ॥ १ ॥ स्वाहा ॥ अर्द्धं नमो रुद्र
 राधानर्ण ॥ ॐ श्री नमो यथाग ॥ ॥ नमो अर्द्धं श्री ॥ ॐ अग्न
 य स्वाहा ॥ ॐ दमनय न्याग ॥ ॐ सामा य स्वाहा ॥ ॐ दी सामा
 य ॥ ॐ अग्नी वा मा र्था स्वाहा ॥ ॐ दम ग्नि वा मा र्था ॥ ॐ अग्न
 जिह्वा सि स्रुद्रं वयं धमनं धमनं भरु वयं रुद्रं वयं रुद्रं स्वाहा ॥

५
 नमो जिह्वा हर्म ॥ ॐ हि नमो य स्वाहा ॥ ॐ दी हि नमो य ॥ ॐ
 कनका य स्वाहा ॥ ॐ दं कनका य ॥ ॐ नका य स्वाहा ॥ ॐ दं न
 का य ॥ ॐ रुद्रा य स्वाहा ॥ ॐ दं रुद्रा य ॥ ॐ सुप्रसा य स्वाहा ॥
 ॐ दं सुप्रसा य ॥ ॐ अति नका य स्वाहा ॥ ॐ दं अति नका य ॥
 ॐ मधु वद्रु पा य स्वाहा ॥ ॐ दं मधु वद्रु पा य ॥ ॥ यदः
 जिह्वा रुद्रं ॥ ॐ सफ न अग्नः ॥ समिधः ॥ सफ जिह्वा ॥ सफ मृ
 ययः ॥ सफ धमपियानि सफ हाग सफ धम स्वाय रुद्रि सफ धम

निनापुषासुष्टुगनस्वाहा ॥ अकजिह्वास्वापनं ॥ ॥ नमः ॥ यं व
 गवाहामं ॥ ॐ ॐ नावती (धनुमती) हिरण्यं ॥ सूर्यवसिनीमन
 वदहस्या ॥ अस्तुत्यानादसी विष्णुवतदाधथेष्टथिवीमहिता
 मयूरवेऽस्वाहा ॥ ॐ ॐ दीविष्णुः ॥ ॐ मानसाकं ॥ ॐ तच्च इ
 दं वहिर्नैपुत्रस्तोक्तं मयूरवत्पथ्यमहानदः ॥ नैव जीवमण
 नदः ॥ नैव नृणां यामणनदः ॥ नैव पववामणनदः ॥ नैव मदीना
 ॥ स्यामणनदः ॥ नैव तस्य प्रणनदः ॥ नैव तास्वाहा ॥ ॐ विष्णुं द

वानामूदगमदनीकंच इमिषस्य वनूगस्या (न ॥ ॥ अथाथावा
 पृथिवी अक नि द ॥ सूर्य आस्माजगैरसक्तु व प्रस्वाहा ॥ ॐ
 अग्नयस्त्रिष्टुक्तं स्वाहा ॥ ॐ तिपयः नवाहामः ॥ ॥ नमो
 वदाहनि ॥ ॐ अग्नयदाय स्वाहा ॥ ॐ दी अग्नयदाय ॥ ॐ पृथि
 वो स्वाहा ॥ ॐ दी पृथिवी ॥ ॐ अग्नय स्वाहा ॥ ॐ दी अग्नया ॥ ॐ
 पीतवर्णय स्वाहा ॥ ॐ दी पीतवर्णय ॥ ॐ वज्र (न) स्वाहा ॥ ॐ
 दी वज्र (न) ॥ ॐ सामाय स्वाहा ॥ ॐ दी सामाय ॥ ॐ पञ्चापतय

15
स्वाहा॥ॐ दीपजापतय॥ॐ कुन्दास्य स्वाहा॥ॐ दीकुन्दास्य
॥ॐ लक्ष्मीस्य॥ॐ दीलक्ष्मीस्य॥ॐ वागीश्वरीस्य॥
स्वाहा॥ॐ दीवागीश्वरीस्य॥ॐ देवस्य॥ॐ दीदेवस्य
॥ॐ मृषिस्य॥ॐ दीमृषिस्य॥ॐ प्रद्वयस्य स्वाहा॥
ॐ दीप्रद्वयस्य॥ॐ मधयस्य स्वाहा॥ॐ दीमधयस्य॥ॐ पुष्पाय
स्वाहा॥ॐ दीपुष्पाय॥ॐ धानधयस्य स्वाहा॥ॐ दीधानधयस्य॥
ॐ सदसस्य तय स्वाहा॥ॐ दीसदसस्य तय॥ॐ अनुमग

य स्वाहा॥ॐ दीअनुमग तय ग्याग॥॥ॐ यशवदाय स्वा
हा॥ॐ दीयशवदाय॥ॐ अनुनिदाय स्वाहा॥ॐ दीअनु
निदाय॥ॐ वायव स्वाहा॥ॐ दीवायव॥ॐ एतवर्धुय
स्वाहा॥ॐ दीएतवर्धुय॥ॐ प्रद्वयस्य स्वाहा॥ॐ दीप्रद्वयः
य॥ॐ मधयस्य स्वाहा॥ॐ दीमधयस्य॥ॐ पुष्पाय स्वाहा॥ॐ
दीपुष्पाय॥ॐ धानधयस्य स्वाहा॥ॐ दीधानधयस्य॥ॐ सदस
स्य तय स्वाहा॥ॐ दीसदसस्य तय॥ॐ अनुमग य स्वाः

हा॥ॐ०दी०अ०न०म०न०य०ग०ग०॥ ॥ॐ०साम०व०दा०य०स्वा०हा०॥
ॐ०दी०साम०व०दा०य०॥ॐ०सूर्या०य०स्वा०हा०॥ॐ०सूर्या०य०॥ॐ०दिवः०
स्वा०हा०॥ॐ०दी०दिवः०॥ॐ०न०क०व०र्ण०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०न०क०व०र्ण०य०॥
ॐ०शु०द्रा०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०शु०द्रा०य०॥ॐ०म०ध०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०म०ध०
य०॥ॐ०प०रू०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०प०रू०य०॥ॐ०ध०न०य०स्वा०हा०॥ॐ०
दी०ध०न०य०॥ॐ०स०द०स०स्य०न०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०स०द०स०स्य०न०य०॥
अ०न०म०न०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०अ०न०म०न०य०ग०ग०॥ ॥ॐ०अ०थ०व०

व०दा०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०अ०थ०व०व०दा०य०॥ॐ०दि०ग्वा०स्वा०हा०॥ॐ०
दी०दि०ग्वा०॥ॐ०च०न्द्र०म०स०स्वा०हा०॥ॐ०दी०च०न्द्र०म०स०॥ॐ०रू०षू०व०
र्ण०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०रू०षू०व०र्ण०य०॥ॐ०शु०द्रा०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०
शु०द्रा०य०॥ॐ०म०ध०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०म०ध०य०॥ॐ०प०रू०य०स्वा०हा०॥
ॐ०दी०प०रू०य०॥ॐ०ध०न०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०ध०न०य०॥ॐ०स०द०स०
स्य०न०य०स्वा०हा०॥ॐ०दी०स०द०स०स्य०न०य०॥ॐ०अ०न०म०न०य०स्वा०हा०॥
ॐ०दी०अ०न०म०न०य०ग०ग०॥ ४ ॥ॐ०मि०त्र०दा०इ०ति०॥ ॥ग०त०मि०

15
 10
 यं चाहं ॥ ॐ ह्र ॥ स्वाहा ॥ ॐ दं ह्र ॥ ॐ कुव ॥ स्वाहा ॥ ॐ दं कु
 व ॥ ॐ स्व ॥ स्वाहा ॥ ॐ दं स्व ॥ ॐ ह्र कुव ॥ स्व ॥ स्वाहा ॥ ॐ दं
 ह्र कुव ॥ स्व ॥ ॥ ॐ त्व नो अग्ने व नू लस्य विद्वान्द वस्य
 हता अव यासि सी सा ॥ यजि स्वा व क्रि म ॥ एम सु चाना विः
 म्म द्या ए सि प्र मू मू म्म स्म स्वाहा ॥ ॐ द म नि धा मा र्था ॥
 या ग ॥ ॐ स त्व नो अग्ने व मा रु वा नी न दि स्वा अ स्या ड व सा
 अ स्ते ॥ अ व य द्वा नो व नू ल ॥ न नो ए म वी हि मृ ती क ॥ स ह वा

न प्र धि स्वाहा ॥ ॐ द म ग्नी व नू ल स्या या ग ॥ ॐ अ या ए म
 ए न स्या न रि म सि पा ए स त्व मि त्व म या अ सि ॥ अ या नो य
 हं व हा स्या या ना ए हि रु य ऊ ॥ स्वाहा ॥ ॐ द म या ए म ए म ॥
 या ग ॥ ॐ य न नो व नू ली य स ह र्वा य द्वा ॥ पा ए म वि रु ता
 म हा क ॥ न रि नो अ य स वि ना थ वि ब्रु वि ए म र्वा उ म नू ॥
 न ॥ स्व क्त ॥ स्वाहा ॥ ॐ द व नू ल म या ॥ स वि रु वि ब्रु व वि ए
 स्या द व स्य ॥ म नू श ॥ स्व क्त स्य ॥ ॐ उ इ ह म व नू ल पा ए म

[illegible]

ॐ कलगायस्वाहा ॥ ॐ नागायस्वाहा ॥ ॐ यदयदा ॥ ॐ
स्वाहा ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीस्वाहा ॥ ॐ कामकामदधुक्कमिशाः
यवनूनायव ॥ ॐ ह्योयास्थिर्यापुष्पपञ्चाखण्डायधीत्यः
स्वाहा ॥ संप्रवृत्तपञ्चवर्षणीकनिधाय ॥ ॥ कलाष्ट
नाइतिपूर्व ॥ ॐ सकलभूतसमिधः सकलजिह्वाः
सकलमृषयः सकलमपियासि सकलहाराः सकलधात्रा
यगन्ति सकलयानिनाष्टणस्तुष्टनस्वाहा ॥ ॐ तिष्ठताइ

निमृर्भु ॥ ॥ गतसिन्हा इति कान्तयुत ॥ वीहिवागुं ॥ मधय
 न ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ अयुदगी ॥ ॥ ॐ पुष्टुष्टु ॥ नदः प्रयुः
 द्या अनातया निष्टुफ ॥ नदः निष्टुफा अनातयः ॥ ॥ यमय्य ॥
 ॐ ॥ अनिगितासि सपत्नदिवाजिनीत्वा वागुं ॥ यमय्य ॥
 सम्मार्जनी ॥ ॥ यजमाननं वीहिवागुं वीहिनिधाय ॥ य
 वादततिलमिष्टं पंचामृतसमिष्टकं ॥ समिष्टं वरुणायुष्यं न
 कदम्बादमालिकी ॥ नगनिधाय ॥ ॥ गुर्वीचार्थपूजनं

मतिरुकिनाहसा घेच नृनयस्त्रापवीतयुष्यवमूलैकानः
 शुधूपदीपान्नसैकल्यादिरि॥ अंगगन्धदि॥ यजमानन
 वीहिपागसमव्येणवाधुं॥ ॐ सर्वो लंकानसैयुक्तैकैकणी
 मुद्रिकानिध॥ कुण्डलानिमुद्रकानि गुनूय॥ प्रतिगृह्यतां॥
 यथायत्नं कुनूयं सर्वं समाख्ये सर्वसाधकं॥ ताम्रपावसिः
 तावीहि॥ गुनूय॥ प्रतिगृह्यतां॥ आयु॥ लिख्यं च कल्याणः
 युगपदगुधनानि च। रुवतां गुनूयसादनं सर्वकार्यं वसिः

द्विदं ॥ गुत्र वपुः कथयत् ॥ ॥ आचार्यविरचितं ॥ ॐ
 दहविंशत्युत्तमं मन्त्रं सुदृढं वीर्यं सर्वगणेशं स्वस्त्यर्थं ॥ ओ
 मसन्निपतासन्निपतुसन्निपतास्तन्मयसन्नि ॥ अग्निः प
 जीवद्गुलाम्भकनात्वं नैपयानता ॥ अस्मात्सुधत् ॥ ॐ इति ॥
 नृदाहमांलापयमनकृष्णजाम्बीनसाम्बलवसुसमिधानि
 नृत्तपुस्तकनिधाय ॥ वीहिवागुत्तमं ॥ गमयग्राहयत् ॥
 मन्त्रं जलनसंकल्पः ॥ वा ॥ ॐ यथा नामाग्नयेवः

ध्याननामवी आइति संकल्पसिद्धिप्रभु ॥ ॥ ॐ ह्रस्वः
 स्वः वज्रः ॥ महावाहतिः इति ॥ इति ॥ इति ॥ इति ॥
 दातव्यं ॥ वज्रपत्नी तव दला कया लस्य विलना गय कय
 दिनी श्री लक्ष्मी ॥ अथ एता मादि सर्व वात्सल्यम लं गति ला
 इति दातव्यं ॥ समिधमह दूत न पूज्यते ॥ अथ न स्पृशत ॥
 ॥ ॥ मिला इति पूज्यं ॥ ॐ पूज्यं देव्यं यथापत स्र पूज्यं
 अथ न नापत ॥ वस्तु वादिको जीवहा ॥ वस्तु वादिको जीवहा ॥

प. नाभिकल, वदनीरुल, गुग्गुआदि, गिरुला, शिकट, त्रुप
 कंगन, पद्मकंगन, सुमुख, लक्ष्मिकल, नकमिल, गतयुव्यः
 प्रियंगु, गुग्गुल, चन्दन, कूकम, स्कन्दमूलरुल, गाम्बूल, पः
 कान्त, इषाकत, वृं क, इग्य, मिश्रान्तामयन् ॥ ॐ यवध
 अतथा लाजा, तिलसंध्यमवच, चतानिपुत्रवाहिद, इन्
 कानिकपोष्टिक ॥ ॥ ततावलिषदान् ॥ ॐ गन्धनांत्वा ॥
 ॐ अम्बुअम्बिक अम्बालिक नमानयतिकचन ॥ सप्तस्त्रुह

क.४ सुरादिकों का पीलनवासिनीं ॥ ॐ घृतं घृतपावानं ४ पिव
तव सांवसापावानं ४ पिवता न निदस्य हविन सित्वाहा ॥ दि
ग ४ पुदिग आदि १००० विदिग उद्दि १००० दिग ४ स्वाहा ॥ ॐ
अपानियुक्ति ४ गतिनीति नक्षत्र ४ सहस्रिणीति रूपयाहियरू ॥
वाथा अस्मिन्सवनं मादयस्य यूर्यं वातस्वस्ति ४ सदान
न ४ ॥ ॐ उलापिवतमन्त्रिनाहानं ४ गर्भयकृतं ॥ अविदि
यागिनीति ४ ॥ ॐ अथ गानक्षोचिन्त्रपा नालरुतं रिदी

15
 धीं वाति कुर्वन् वाति सुलं वाति कृणु अति पुं वाति कृषुं वातिः
 कर्त्तुं वाति ताम मर्त्तुं च ॥ अगू दा अवा न्न एम सु पा मा प त्या ॥ मा ग
 ध म पुं शु ली कित द ४ क्री वा गू दा अवा न्न एम सु पा मा प त्या ॥
 ॐ विष्णु नृ पृ द्रु नृ त विष्णु मा मू र्वा विष्णु मा वा द्रु नृ त विष्णु नृ त्वा
 न ॥ स म्वा द्रु नृ त्वा ध म गि स प त गे र्वा वा द्रु मी न न य न्दे व पुं क ॥
 ॐ न म्मा व द्रु ॥ ॐ अ र्त्त र्वा ता ॥ ॐ अ र्त्त र्वा च ॥ ॐ वा चो दि
 10
 र्वा स्वा हा वा चो दि र्वा स्वा हा द दि एम यदि र्वा स्वा हा वा चो

दि र्वा स्वा हा पु ती चो दि र्वा स्वा हा वा चो दि र्वा स्वा हा दी चो दि र्वा
 स्वा हा वा चो दि र्वा स्वा हा द्वा ये दि र्वा स्वा हा वा चो दि र्वा स्वा हा
 हा वा चो दि र्वा स्वा हा वा चो दि र्वा स्वा हा ॥ ॐ ति पु न्ज न ॥ ॥
 ॐ स्वा दि द म्मा क पा ल न स च दे व ता न दे व आ दि द म्मा न ॥ ॐ अ
 न प त ॥ ॥ पु न्ज न दे वा दी न वा न्न एम दी न य अ र्त्त व द न
 अ न्न स क ल्प ४ ॥ ॥ त ता म हा वा द्रु नृ त दी प वृ त्तिका
 हा म ॥ ॐ अ र्त्त वा चो प य म ना य न ॥ पु प अ सा म वा चो प य

१५
 अचक्रः (अ) गुपयय ॥ वा (ग) जः सहो आ म यि प्रा ण वा (भे) स्त्रा
 हा ॥ १ ॥ य म्मि द्दं च द्वा वा ह द य स्य म न सा वा ति रु णी द्द ह स्य
 ति म्मि त द्वा वा ॥ ग न्ना रु व गु गु व न स्य य स्य ति ॥ २ ॥ उं हः
 कुं वः स्त्रः म य शी य (०) न ॥ ३ ॥ उं क यान ति रु आ गु व द्वा
 स द्वा द्वाः सरवा ॥ क यान वि रु या व न्ता ॥ ४ ॥ क स्त्रा म स्या मः
 दाना म्म ॥ हि स्त्रा म स द न्ध स ॥ द्वा वि दानु ज व स ॥ ५ ॥ अ र्वा
 १०
 वृ णः सरवा नाम वि ता रु नि रु ण म् ॥ ग र्वा रु वा स्य ति ति ॥ ६ ॥

चनः

क यानु गु रि प स न्द्र स व द्वा न ॥ क यानु गु रि प स न्द्र स व द्वा न ॥ १ ॥
 ०० न्द्रा वि रु स्य ना ज ति ॥ ग न्ना अ रु द्वा प द णी व रु द्वा द ॥ २ ॥
 ग न्ना मि रु ॥ ग व नु ण ॥ ग न्ना रु व त्व र्वा मा ॥ ग न्ना ०० न्द्रा द्वा
 स्य ति ॥ ग न्ना वि रु नु न क म ॥ ३ ॥ ग न्ना वा न ॥ प व न्ता एं ग
 न्ना प रु रु र्वा ॥ ग न्ना क नि रु द द्वा व ॥ प रु न्ना अ रु वि रु वः
 ५ ॥ १० ॥ अ रु नि रु नु व नु न ॥ ग न्ना गी प ति धी य ता ॥ ग न्ना
 ०० न्द्रा गी रु व न्ता म वा ति ॥ ग न्ना ०० न्द्रा व नु ण ना न रु द्वा ॥ ग

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 ॥ गन्नादिवी ॥ ११ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 यश्चान्नः शर्मसंयुतः ॥ १२ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 दुर्जयदधनः ॥ महान्तमयवदसः ॥ १४ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 कृष्णार्जुनसंवादे ॥ १५ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 मवायस्य दयाय जिन्वथ ॥ १६ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 भक्तिनक्तनिदः ॥ भक्तिः ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

[illegible]

नमस्तुभ्यं विष्णवे नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥ नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं
सु० समीहस ॥ २१ ॥ यथा यत्नः समीहस ततो नाभूयैकत्र ॥ २२ ॥
नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं पशुभ्यः ॥ २३ ॥ सुमित्रियान् आशुताव
धयः सन्तु इन्द्रियैः स्यात्समेतं यथास्माद्दृष्टिर्न वदयै द्विष्ट ॥
तत्र दृष्टं वदितं यत्नस्तु कुरु कुरु यत्नः ॥ पश्य मग्नं नदः गतं जी
व मग्नं नदः गतं च लूया मग्नं नदः गतं पुत्रं च मग्नं नदः गतं
मदीनाः स्याम गतं नदः गतं दयत्युग्नं नदः गतं साह ॥ २४ ॥

अष्टादश नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं ॥ नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं
मं ॥ आशुताव ॥ उपममनं कुरु मग्नं स्यात् ॥ २५ ॥ सु० साह ॥ २६ ॥
पुत्रं ॥ साह ॥ २७ ॥ सु० साह ॥ वद ॥ २८ ॥ सु० त्वं नो अग्नं वद नमस्तु
विष्णवे नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं ॥ यजिष्ठं वदितं मग्नं ॥
पुत्रं नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं ॥ २९ ॥ सु० दमनीः
मामास्याग ॥ ३० ॥ सु० सत्त्वं नो अग्नं वद नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं
स्यात् ॥ ३१ ॥ सु० वद नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं ॥ ३२ ॥ सु० वद नमस्तुभ्यं गवतः नमस्तुभ्यं

१५ १ सुहवानुधि स्वाहा ॥ ॐ दमग्नी व नृणां र्षी म ॥ ॥
 ॐ अया अग्ने स्य न रिसि पाशु स त्वे मित्वे मया अरु सि ॥ अ
 याना य रू व हा स्य याना धि र्गु म ॥ ॐ दमया अग्ने
 म्या ग ॥ ॥ ॐ य न गी तं व नृणां य स ह र्षं य रू ॥ पाशु वि र
 गो म हा नृ ॥ त लि त्ता अग्र स वि ता थ वि पू र्ति ॥ ॐ य नृणां य स
 त ॥ सु र्ग ॥ स्वाहा ॥ ॐ दं व नृणां य स वि नृ वि पू र्व वि र्ग्य स्या
 द व र्ग्य ॥ म नृणां य स र्ग ॥ ॥ ॐ उ इ र्ग मं व नृणां पा स

५ म स्म द वा ध मं वि म धु म ॥ अथ व य मा दि र्य वः
 त त वा ना ग सा अरु दि त य स्या म स्वाहा ॥ ॐ दं व नृणां य स वि
 त्या धि प त य स्या ग ॥ ॐ ति र्ग व वा नृणां ॥ ॥ चतु र्ग्या हि ॥
 ॐ वा हि ना अग्ने न स स्वाहा ॥ ॐ वा हि ना वि र्ग्य व द स
 स्वाहा ॥ ॐ य रू पा हि वि र्ग व स स्वाहा ॥ ॐ सर्वं वा हि
 गी त क ता स्वाहा ॥ ॐ नृ न र्य ॥ स्वाहा ॥ ॐ नृ ना ति नि र्ग

१५
शुद्धा मिस्त्राहा ॥ ॐ अतिनिकं शुद्धा मिस्त्राहा ॥ ॐ अनासः
तं यदा स्नातं तत्सर्वं कियतं मम ॥ सर्वं गदग्नौ कल्पनिः
विहितं तिस्रथ हि नः स्वाहा ॥ ॥ वद्विग्नं यगी ॥ ॐ वः
क्षिन्नं यविग्रहः अनं नाद्विगायधीमहि ॥ तन्ना वद्विः
पवा दयात् ॥ ॥ ॐ देवकृत्तस्येन सावयजनमसिस्त्रा
हा ॥ ॐ मनुष्याकृत्तस्येन सावयजनमसिस्त्राहा ॥ ॐ पितृ
कृत्तस्येन सावयजनमसिस्त्राहा ॥ ॐ आत्मकृत्तस्येन सा

१०
वयजनमसिस्त्राहा ॥ ॐ पुनस्तपुनसावयजनमसिस्त्राहा ॥
ॐ यश्चाहमना विद्वांश्च कानयश्चा विद्वांसस्तस्य सर्वस्येन सा
वयजनमसिस्त्राहा ॥ ॥ ॐ इत्यनयपृथिव्यै च महर्गः
स्वाहा ॥ ॐ शुक्ला वायव्यं चानि कायमहर्ग स्वाहा ॥ ॐ स्वः
सूर्याय दिवं महर्ग स्वाहा ॥ ॐ इक्षुर्वः स्वः चन्द्रमसं नक्षत्रं
त्युदितं ॥ ॐ शुक्लाय महर्ग स्वाहा ॥ ॥ ॐ त्रयवर्णं कः
ॐ अग्निं नग्निं देवतायां यस्वाहा ॥ ॐ इक्षुर्वः स्वः चन्द्रमसं नक्षत्रं

15
क्रिष्णाग्नित्रपाणयस्त्राहा ॥ ॐ विष्णुर्किंजल्कवर्णुप्रण
यानिः ॥ सामदेवगाद्यानायस्त्राहा ॥ ॐ यमकिंजल्कवः
वृष्टककाग्निर्द्वीपदेवगाउदानायस्त्राहा ॥ ॐ (मकीनव
वृष्टवायानिर्धनेषदेवगासमानायस्त्राहा ॥ ॐ अत्रः
पातिअत्रकानिर्जूनपत्रवृक्षअमृतापिचननायस्त्रा
हा ॥ अत्रपाणयस्त्राहा ॥ ॐ पुनर्जूननिदलस्त्राहा ॥ पुनः
नग्नः वायूया ॥ पुनर्नः पाय ॥ हसः स्त्राहा ॥ ॐ सहन

10
यानिचलस्त्राग्निपिचस्त्राधानया ॥ विश्वपत्न्याविश्वतस्यनि
स्त्राहा ॥ ॥ तगायजस्रिः ॥ ॐ स्वस्तिनः ॥ द्वादशप्रवाः
स्वस्तिनः ॥ यथाविश्ववदाः ॥ स्वस्तिनः काश्रिः अनिष्टनमिः स्व
स्तिनाहस्यतिर्दक्षस्त्राहा ॥ ॐ ययः पृथिव्या ॥ ॐ विश्वाः
ननाट ॥ ॐ अग्निदेवगा ॥ ॐ आः मन्त्रि ॥ ॐ शुभ्रकयगा
महस्त्राहा ॥ अत्रजगज्जयः ॥ ॥ यवभान्यादिवर्तिका
कैवलिनन्द्या ॥ ॐ उदयनमस्यनित्यः पञ्चकडकन ॥

[illegible][illegible]

कः कः सुमानि सुखं दत्तं विनयं सुखं सुखं सुखं ॥
 सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥
 सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥
 सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥
 सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥
 सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥
 सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥
 सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥

आशुयमानाभूमृतायसामदिविलुवाणं स्युदमानिधि
 वं ॥ ॐ आशुयसामदिकमस्यमविन्धिरिषलुलि॥ रु
 वानः सपथः समः सखाधुध ॥ ॐ आनवत्सामनायम
 सनमात्रितसधस्तात् ॥ आनत्वाकामयागिना ॥ ॐ रुय
 काअंजिनसमविन्धः सुकिलयः पथक ॥ आनकामा
 ययमिना ॥ आनिः पियवृधमसूकामाहृतस्यरुवास्य ॥

सम्पादकाविनाशति ॥ ॐ पयः पथि श्री ॥ ॐ दवस्थान्वा ॥
 ॐ भूविनाशेयश्च न न ज स व व व व साया रि वि अ मि स
 न ह न ह ह ह ह ह न वी र्या या ना या या रि वि वा मि नु स्या दि
 य स व ला य प्रिय य स स रि वि वा मि ॥ ॐ द्र प दा दि व मू मू वा
 न ॥ स्वि न ॥ स्ना गा म ला दि व ॥ पूर्ण प वि षु नै वा श्र या प ॥ ॐ न्दु
 मे न स ॥ व दि द्वा उप य म न कृ ण रु ढा व स क ल्पे का य ॥ ॥
 ॐ उ द य न म स स त्प नि स्र ॥ प थ्य क उ रु नै ॥ द व न्द वी णा स्र य म ॥

गन्धर्वानि नरुर्म ॥ ॐ श्री गुरु ॥ ॐ नमो वसुधैव कुटुम्बकम्
नयनमः ॥ सृष्टिं वी नमः ॥ डा य धी र्यानमावाच नमावाच ॥
स्यतयनमाविष्कृतं मदत कनामि ॥ ॐ नमो विष्णु स्याम
स्यदवानां वरुति श्रयं कनिष्ठा नैव सामिक निष्ठा मित्रं
वर्ग ॥ ॐ यदवासादिवाकादगस्तु सृष्टिवा म ॥ ॐ का
दगस्तु ॥ ॐ सृष्टिनामहिनेकादगस्तु तदवासाय रुमि

मंशवर्ध ॥ ॐ यूनस्त्यादिया ॥ ॐ आवसुधैव कुटुम्बकम्
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ नमो वसुधैव कुटुम्बकम्
हान ॥ ॐ गायतामा नादु नागन्य ॥ ॐ नमो वसुधैव कुटुम्बकम्
धिर्गो मा जिष्णु न ॥ ॐ सृष्ट्या युवा स्य यगमानस्य ॥
वीना गायता नि काम नि काम न ॥ ॐ यैः न्यावर्षं वरुल व
त्या न डा य धी र्यानमावाच नमावाच ॥ ॐ यध
मादिती यं द्वितीया सृष्टी यैः सृष्टी या ॥ सत्यं सत्यं यैः सत्यं

15
 10
 शायदार्ह्योद्गुणं विसामलिः सामान्यगुणैश्च यूनान्
 वाक्पुलिः यूनान्वाक्पुयायारिग्याः आवयद्वा नैवषेकाः
 नाभ्राह्मणितिनारुतया मकामान्ममईयत्तुत्तः स्वाहा ॥ ॥
 हिमस्यत्वागनायूषमभलयनिवृत्त्यामसि ॥ उतक्रदाहि
 नाकुवाग्निर्देदातु रुषर्ज ॥ एतक्रदाहिनाकुवाग्निर्देदातु
 रुषर्ज ॥ अतिकादग्निमग्ननयं योर्वा दः सिधुनागमात्
 ॥ अगागपदपूगांश्च ददयं ममद्वयतं ॥ विपुलं वदनं

5
 वक्रा. काशीचनजातवदः ॥ कामयः ॥ मांश्च न कपूगांश्च गः
 नर्णचमुत्तगत ॥ विंगमदलाहिरग्रीव. कपूवर्णुनेमा मुत्त
 ॥ अविह नहि नः ॥ स्या. त्सागनस्य मयूयथा ॥ ॐ नुः ॥
 गुंदध्वातु वनूणमलिर्षिचतु ॥ एतवाग्निभनं यातु रुयत्वेव
 अतजसा ॥ कपिलजटीमद्येत्तदी. वाग्निपुत्र्यददेवर्ग ॥ व
 नूदीववसाप्रग्नि. ममपूगांश्च न कसि ॥ सागवर्षेणार्तजीव
 विववातिवमादच ॥ इहस्वितांश्च द्विजोर्षेव. पुगांस्यात्

15
गुणान्नय ॥ यावदादिश्रुपति, यावद्भागतिचन्द्रमा ॥ या
वदायुः ॥ प्रवायाति, तावद्जीवत्वयासह ॥ यनकनप्रकानन
माहमानानजीवति ॥ पनयामृषकारार्थ, यद्जीवगिसगी
वति ॥ चकसकृन्गहसुन, द(ग)नत्वंविपूल ॥ पृथिवीत्वं
हिरुयंर, नकचुर्गदधिना ॥ ॐ तिहिमस्यत्वा ॥ ॐ मं
वर्हि न हू ॥ ॐ हविषा घननसमादिश्रुर्वसुति ॥ समन्तूरुहि ॥

10
समिद्धाविश्वदवतिन हूादिव्यान्नतागकृत्तयत्वाहा ॥ ॐ
दपागनकृत्त, उययमनकृत्त, आश्रुतामृषीनृश्रुयात्त ॥
॥ खर्गृदीत्वा ॥ प्रव्यष्टदानी ॥ आसंताय ॥ ॐ मन्तुर्ध
॥ मन्तुकलमस्तुति लवधननादि ॥ गदवगा ॥ सुप्रीतावनदाह
वैरु ॥ गुनृ(ग)मवाध्र(ग)स्य ॥ गुर्तुवकु ॥ नाजाधमैविजयीरवकु
॥ प्रजा ॥ सुखिन ॥ मन्तु ॥ दगा ॥ गुर्तुदयाम् ॥ अस्मत्तयजमान
स्यसगलपत्रिवाताम मा प्रनागाधमैव्ययजनधनलक्ष्मीम्

नतिसक्तानवद्विभक्तु ॥ द्विपदलुप्यदत्यंशुलंरवतु ॥ स
वसिवाः सुखिनः सन्तु ॥ पर्युक्तं च कालवर्षात्तवतु ॥ नो ह्यधि
पतः खड्गसिद्धिभक्तु ॥ यत्तापवद्विभक्तु ॥ सर्वे विधिपरिपूः
रुमस्तु ॥ ॥ जायमानस्तु ॥ ॐ भूभुवः स्वः ॥ ॐ

मृगवदायस्यपादायशून्यनयनपदः सामवेदाथहस्तं प्रका
थवादितां प्रगतपथवेदनं वाहतां वृक्षधायी ॥ मयगीयः
स्यमग्नं नयनमूपनिषत्कीरुम ॥ अवेदं दद्यात् विष्णुं प्रकृते

मूर्तिं सवयुतिवदनं यरु नृपीवनाहः ॥ १ ॥ नकाधुक्ताः
तिरुक्ता रिपथगतिभूता गतिदद्यात् रिमाणा त्वं तुष्टाः
यवत्तु विवृधपदगता स्तुतिवर्गः ॥ पुंसिद्धा ॥ तानुः
व्यावाल्मवद्वाहवतिरुवतनागीनिकालप्रवाधं वेदामो
नासृगर्जाजयकुजयप्रदानित्यनृपालिर्वागमः ॥ २ ॥ यय
यरु वृक्षं स्तादिनिविदितिनि बोसीस्तिनादवमायाः क
लुवावद्विभक्तु ॥ अकलपनिवृत्तामधुलं स्तुतिं वा ॥ तस

१५
 १०
 न कवपदेनीयगयस्यनित्यं, प्रागसु० कलसु० सुविगलम
 निति० यागुवावदवद० ॥ १० ॥ दवामगमदमीलममपिच
 पत० पल्लव० कमुनरि०, (गर्भकीनेसीर्थमाय०) कसुमरुल
 सुग(न्धोषधीवीहिनल०) ॥ दीप० सुगादनाय० मेलयगन
 सहुँहिसिन्दुइवो, वृष्यनेवग्रथूप० स्वकूलकविधिकतन
 मपूर्वकृतं ॥ ११ ॥ ॐ नृतोषधी ॥ ॐ अश्वत्थामा ॥ ॐ विष्णु
 माय ॥ ॐ नित्यानन्द ॥ ॐ नमस्कृतकपिल ॥ ॐ नमस्कृतदवदवः

५
 मं (गममयसंतर्वनिर्व ॥ सर्वपविगुरुदह, पशुगचुम्बनैष
 नै ॥ (गममयलिंगया ॥ ॐ नागयागमसकानित्यं जलनाजाम
 हावल० ॥ निम्नग(वेवविख्यात, नागनाजायतनम०) ॥ ॐ य
 कपीयदनागनु, श्रीलक्ष्मीगणदवता० स्नानाधिपनमस्कृत
 मथावसरतनम० ॥ ॐ ॐ दवदनमस्कृत ॥ मालकासुनिध
 न ॥ ॥ ॐ सक० सनुनिनकनीसुहृतिनाविधसपापादजा
 नागान० प्रतिपालयनुवसुधावमस्तित्तसधेदा ॥ कालसः

15
 कतिवर्षिः ॥ अजलमूचः स लुप्यजाः ॥ युष्मदा भादनाधिनवदि
 वान्धवसुहृत् आहीषुमादाः सदा ॥ १ ॥ जिह्वादायात्यवनच
 लनाकुष्मनादिन्दुपाताम् लखाः शुद्धलिरवनयतिर्नलः
 फयर्धेदनेम् ॥ माग्राहीनयदिकुपतिर्नपथ्यमानविनस्त
 मरत्सर्वगतदिविचमयास्तुमनस्तुमर्थ ॥ २ ॥ अंशुस्त्राने
 काननोवापि यन्मयामाहिर्नस्त ॥ ककुमहसिदवभाः
 10
 कमायुर्महतापि ॥ ३ ॥ गुरुमस्तुसर्वजगतां यन्निहित

कनूपांस्तगतगर्भादायां प्रयातुलानिः सर्वगसूखिना
 वलुलाकाः ॥ ४ ॥ त्वेगतिः सर्वदत्तानीं संस्तुतात्वंवना
 वन ॥ अन्तःस्थानादत्तानीं दृष्टात्वंयत्रमन्त्र ॥ ५ ॥ कर्म
 5
 ममनसाधावा त्वत्तानां गतिर्मम ॥ मनुहीनीक्रिया
 हीनं लकिहीनं तथेव ॥ ६ ॥ अयहामाह्वनीहीनं हननि
 त्यमयातव ॥ अहर्तवाकुहीनं च नस्यूनयइतामन ॥
 10
 यथवातं प्रहनाम् ॥ यजमानस्यामृककार्यकृतालि

दत्तत्वा ॥ यरु सिंहासनात् न यजमाननिर्ममकुर्न ॥ कल
 मदि यन्दनाली धाद ॥ यजमानप्रतिष्ठा ॥ ॥ अग्निने
 मत्कान् ॥ ॐ न कुं जा ना वृणीमह गम नु यरु य गम नु यः
 रूपतय ॥ दवीस्वस्ति न मुनः स्वस्ति मानूयस्य ॥ ॐ इति
 गम नु यजमाना मुद्विपदवपुज्यद ॥ ॥ गमवत्या
 दिस्वस्ति स्ताननयत ॥ ॐ यरु यरु ग क यरु यतिगः
 ॐ स्वीया निग कृत्वोहा ॥ नयत यरु यरु पत सहस्

कौवीरः सर्ववीनस्ते शयस्वत्वाहा ॥ यरु दिसर्जन ॥ आ
 सैकत्वा ॥ ॥ ॥ यहा न ॥ ॐ ह पु नः स्वः स्वाहा ॥ य
 धनामा नय स्वाहा ॥ ॥ मुद्विप ॥ ॐ ग क ग क स
 न ॥ ॐ आत्मा सैसा नवाहनः ॥ यरु यरु काल यादवा न
 ग क इता ननः ॥ अर्धवाग्नि नु अग्नी अर्धमुरवी
 कय ॥ आ वन्य ॥ उपस्यर्जन ॥ ॐ विष्णु ॥ द आत्मा ना नी व
 जन ॥ वा म्मादिहा जन ॥ ॥ कृतिका या अर्धक क क

ग्रंथांतरे ॥ शय्यातिं च सुकन्या च चवने शक्रमधिना ॥ भो
जनो ते स्मरेद्विज्यंतस्व च क्षुर्न नश्यति ॥ १॥
श्री सार्णवा

(श्री गणेशाय नमः ॥ श्री लक्ष्मीकाले ॥)
(श्री कल्याणाय नमः ॥ १॥)

श्री यो पुस्तक श्री भवानि संस्कार राजा पांथ्या को पुष्टक
कसे ले लो न गनु लो न गयो भने पं महा पाप त्याग
हं ॥ १॥

ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ अथ कलम च न विधि विस्तरः ॥
हो पांथ्या माननामि चक ॥ धूनि कुपु श्राय ॥ स्नान चरु सि
धुता कलं ख जान कं ॥ ॐ धूयादि ॥ वा ॥ यजमान
स्य पुत्र कला न प्रो गन कल म च न कर्तुं धी सु यो या ॥
ध्यान मः ॥ ॐ माहा धका न म ग्ग म नो जनानां स्नान न ॥
मि मि ॥ १॥ कन मुद्र न धी य न न नो मि मि व रा स्वन ॥ रा
स्व नाय पुष्य २॥ पूजा र वि धि र्ना ॥ ॐ सिद्धि न मु ॥

15
यजमानस्य पूरु रुला न प्रागन कलम च न निमित्तार्थकम
पुत्रपुष्पराजनं नमस्कृतमि ॥ ॐ यशर्वदाय न्यादि ॥ वास
नरुमाक कतन ॥ ॐ पुष्पराजनं समर्पयामि ॥ पूजार्
विवाहलवैकाय ॥ वास (नस्तूर्यार्थकानयन ॥
ॐ अयादि ॥ वास्य पूर्ववत् ॥ गुनं नमस्कृतं ॥ न्यासार्थः
पारुपूजा ॥ आस्य पूजार्क ॥ ॐ सर्वेषु कलमयमृष्युज
आया ~~मृती~~ मृती ग कि सहिताय ॐ दमासनं नमः ॥ पुष्प २ ॥

ॐ गणपत्यादि सारंगस्य ४ स गणपतिवाचस्य ॐ दमासनं
२ ॥ पुष्प २ ॥ ॥ ॐ गलाद्यानां च नमः ॥ ॐ वृषभे नमः ॥
ॐ गलायामिवृषभे नमः ॥ सुदामा सुयजमाना हविः
॥ ॐ अहं उमाना वरुणा हवाध्वरुणा ॥ समान आशु ४ प्रमा
मी ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ त्वमग्नेयु रित्त्वनागुलु दित्त्वम
सुस्वमसमानस्य त्रि ॥ नृवनस्य त्वमीषधीत्यत्वेनृषीनृपेन
जायस्यु वि ॥ ॐ आया अस्मान्मागन ४ पुन्धयनुद्यन

नाद्युक्तं च ४ पुन नु ॥ विष्णु ७ हिनिष्पृष्वहनिदवीनुदिदायः
 १५ सुचिनापूतनुमि ॥ ॐ यस्याहू म्मा गृहं हविस्तमः (नेवर्द्धया
 त्वं ॥ तस्मै देवा अधिभुवनय ३ वृक्षे लस्यति ॥ ॐ यदधुना
 पथमं जायमानं उग्रं तस्मै पुडा इति वायुनी वातः ॥ ॐ नमो यदा
 हनिषास्य वाह उग्रं सुग्रं महिमा गन्तुं भूषणे ॥ ॐ यदा ननु य
 द्भुवः पृथगादि पद्मं समुत्तमं ॥ तस्मै रुद्रं सिधेयादि नमो
 १० त्वं नमो म्यहं ॥ ॐ स्यान्नाद्यधि विना एवानुदना निवर्धनी ॥

यच्चानं ४ गम्ये सप्रथमं ॥ ॐ यत यथ ४ सवित ४ पूर्यासा
 नं व ४ सुकगाभूत निदं ॥ तस्मिन्ना अधिपति ४ त्र
 गलीनका चना अधिववृहिदव ४ ॥ ॐ आमन्त्रे त्रिदुह
 त्रिनिष्पृष्वहनिमं पुननामति ४ ॥ माता कवित्रियमन्त्रिचपा
 ५ मिनादि च वतों रं ० हि ॥ ॐ वा नादवा नचस्य वि (ध्व
 वताददकं अग्ने ४ ॥ उग्रं वा च साध्या सायम्यमाना ४ ॥ ॐ व
 त्वा निष्पृगमं या अस्मन्नादादि मायं सुकहस्ता सा अस्या ॥

15
विष्णु वद्वा वृषहात्रा नवीति महादवाम सुां रं आ वि व
म ॥ ॐ पु अरुत मन डत यु अरुत धिया विषा विषु स्य वृह
ता विषा विषु न ॥ विहाहा द (ध व यु ना विद क ॐ न म सी दे
व स्य स विरु १ प निरु ति १ स्वा हा ॥ ॐ ॐ द वि वि १ ॥ ॐ अ
ग्नि मी ॐ यु ना हि न य १ स्य द व मृ न्यु १ ॥ हा ना न वे त्र धा
त म ॥ ॐ ॐ व त्वा ऊ त्वा ॥ ॐ अग्नि आ या हि वी न य गृः
हा ना ह वा दा न य ॥ निहा ना न स्य व हि वि ॥ ॐ ग ना द

10
वी ॥ ॐ उ य रु न गि त्री ल ण णं स ग म च न दी ना ॥ धिया वि
षा अ गा य त ॥ ॐ न दी स्य १ प्रो अरु र मृ दी का स्या न र्य
द पु नू व वा या य इ म्म द ग न्ध वी यु ना स्या वा ग्य प्र यु ॥
५
स्य ड न्म ल १ स र्य द व ज न स्या यु नि य द म य स्य १ कि
त व मी यु गा या अ कि न वी वि ष म च स्या वि द ल को ना ॥
स्या उ धा न स्य १ क णु की का नी न ॥ ॐ ग ल न ना त्वा ॥ ॐ व
ह स्य न अ ति य द स्या अ र्हा यु म वि हा ति क उ म ऊ न व

यद्दीदयचुवसः मृतयुजा यततदस्मासुदविर्दीधहि
विर्दी ॥ ॐ यावकानः ॥ ॐ श्रीधर ॥ ॐ अस्माकमिन्दुः
समृतयुवजं अस्माकं आ ॐ यवकाजयलु ॥ अस्माकं
वीनाउरुनरुवैवस्मां २ उदवा अरुतादवैयु ॥ ॐ न
मावसुभय आधिननानीपतयनमानमारुवस्यः
हृत्प्रेजगतीपतयनमानमानुदायातनायिनदुगा
अम्यतयनमानमः ४ सुगायाह-शेवनानीपतयनः

मानमः ॥ ॐ सकयुजरुनितथमवकुमका अस्माक
वतिसकधमादणनिचकुमजल यकनाविर्दीयुवनानि
नकुः ॥ ॐ अस्माकसा अरुताउरुवयुः ४ सुमीगलः ॥ य
चेन ४ नूदा अरुतादिशुलितः ४ सह ॥ अचवा ४ हउ ॐ
मह ॥ ॥ ॐ तिसुमीगल दनाचनः ॥ ॥ ॐ लीपुर्
कल ॥ अयमृ अरु याया मृगी ॥ कि स हि गा य ॐ दमा स
नीनमः ॥ युवः २ ॥ ॥ ध्याने ॥ ॐ वृषसिंहस्तिनन्दे व

धेनीः

दीनवृक्षसन्निह ॥ एकवर्कविनर्गच वरुर्गुमह
स्वर्ग ॥ विशृला दधनन्दर्व वनकलगाधनिर्ग ॥ वामानु
स्तुगगादवी, द्विजुजाकलगाधवर्ग ॥ हमारुनेगहर्वा
गी (स्वगास्त्रनवित्पक्ष ॥ नवामृती धनं ध्यात्वा सर्व
पापघ्नमर्ग ॥ ध्यानपूर्व २ ॥ ॥ वदः ॥ ॐ आशिष्य
कलगीमझत्वा विनीतिन्दव ॥ पुनर्गुजा निवर्तस्वमान ॥
सहस्रं धूदा वृधनापयस्वती पुनर्मा विधमादयि ॥ ॐ

मम्मर्गगयपुनसन्निहतीनतद्रुसामसचका ॥ पुनर्गुजा भू
गामर्गमर्गद्विधवित्तुयार्कि की यष्टुया सुखामयो ॥ ॐ
सिमासिहसन्निहयुसंगमगगासुगासादिव मृत्युर्गनि ॥
नवर्गनर्विष्टगनिधीयासुवर्गनासा ॥ मृतत्वं रुजुन ॥ ॐ
यचनय ॥ सनस्वती मयिये कित्तुयागस ॥ सनस्वती पुन
वधाम्नादरगतवसन्निह ॥ ॐ वरुणस्यार्ग रुनमसिवरु
गस्यत्वं रुसर्गनी स्का वरुणस्य मृतसदन्ये सिवरुण ॥

15
ॐ वायावसाकानामग्निनायस्यवपुत्वाहाहाहाकनड
धनिरसमानुर्गगच्छत ॥ ॐ अयं स हसुमृषिरिः सहस्र
नः समुद्रं वपुष्यु ॥ सस्यः सा अस्थमहिमागृणम
वायुरुमुविषुनाज ॥ ॐ पुजापतनत्वदना न्य न्याविः
ॐ नृपाणिपनितावद्वे ॥ यत्कामास्तु शरुमस्तु नो अ
मुवये ॥ स्यामयतयानयी ॥ ॐ सफमृषयः ॥
10 निहिताः गत्रीनसकनदुनिसदमप्रमाद ॥ सफायः

5
स्वपनालाकमीयुक्त ॥ अशुना अस्वप्रजोसकसदोः
वदवो ॥ ॐ दधिकोचू अकाविषं जिष्णुप्रभस्य वाजि
नः ॥ सनेतिनामरवाकनस्वदा अशुणं विनाविषन
ॐ दीर्घायुस्त्वायवलायवचस ॥ सपुजास्त्वायसहेः
ना अरथजीवः गनदः गत ॥ ॐ याः रुनिनी ॥
ॐ न्यन्तुमादि ॥ ॥ ॐ गणपतय ॐ दमासनेर
॥ ॐ गणपती ॥ ॐ गणपती ॥ ॐ गणपती ॥

गरात्रेतर्पयत

15
शुवानमानमावाक्यवाक्यतिर्य्युवानमानमागृ
त्सर्पागृत्सपतिर्य्युवानमानमावित्रूपर्याविश्वरूप
र्य्युवानमानमः॥ॐ मनामनव्ययतवांसमनव्य
यतयागमनव्ययतवकुम्भनव्ययत(५५)मनव्य
यतात्मानमनव्ययतपुजामनव्ययतवपुःमनव्य
यतगणममादिर्य्यन॥ ॥ॐ निगमपतिः॥ॐ
10
हस्तानदोषालोचनं॥ॐ दमासनं॥ॐ पूर्वा॥ ॥

ॐ असीरुताता॥ॐ जातवदस॥ॐ अश्ववाच॥ॐ न
मावदुग्धमय॥ ॥ॐ निवलिः॥ ॥ॐ कविलादि
वीरगममाकृत्यः॥ॐ दमासनं॥ॐ पूर्वा॥ॐ आय
5
गमेष्टुमित्रकुम्भदग्दमासनं॥ॐ विनत्रपुत्रयः
॥ॐ॥ॐ अदिदिनिशानदिनिनक्रनिदमदिनिमोतास
पितामपुत्रः॥ॐ विद्वदवाअदिनिः॥ॐ वज्रनाअदिनि
ज्ञानमदिनिर्ज्ञानिर्वा॥ॐ मानसाकं॥ॐॐ वेत्वा॥

ॐ यातवेदसेश्वराणावसोममरातियतोनिजहातिवेदः॥ सनिषदुर्गोनिविश्वानावेवसिदुंदुरितात्यग्निः

ॐ समस्तबुद्धयः ॥ ॐ तिलगमयसः ॥ ॐ कोमाः
नीदबुद्धिमासनी ॥ ॐ पूर्वा ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ नमः
गम्भवाय ॥ ॐ यशुवा ॥ ॐ विष्णुनाट ॥ ॐ यस्याहम्भवा
॥ ॐ ॐ देवीविष्णुमन्त्रानुवर्त्तमाना लवय ॥ ॐ देवी
विष्णुमन्त्रानुवर्त्तमाना लवन ॥ ॐ मिमं यजमानदेवी
प्रविष्णुमानुषीत्यनुवर्त्तमाना लवन ॥ ॐ कामवदसः ॐ
हिनः ॥ ॐ तिलकोमानीपूजा ॥ ॥ गंगासूत्र

दि ॥ ॐ सूर्यादिसौम्यसगणपतिवाचस्य ॐ दः
मासनी ॥ ॐ पूर्वा ॥ ॐ आरु ॥ ॐ ॐ देविपू ॥ ॐ
नमः गम्भवाय ॥ ॐ गम्भवा ॥ ॐ नमावर्त्तमानाय ॥ ॐ
मीवान्द्योधान ॥ ॐ नमासुसूर्याय ॥ ॐ कामवदसः ॥
ॐ नमः गम्भवा ॥ ॐ यथादातीन ॥ ॐ बृहस्प
त ॥ ॐ धी ॥ ॐ यावकान ॥ ॐ विष्णुपुत्र ॥
॥ ॐ मिहिरवारिवापूजा ॥ ॥ ॐ आदिन्यादिन

[illegible]

हस्यगं अति ॥ ॐ अत्रात्यनिधूता न संवत्सरा अपि वत्तः
 दार्ढ्यं यथा ॥ सामं यथा यति ॥ अत न सत्यमिन्द्रियं विषो
 न ॥ गुं कं मन्धसं ॥ अत न सत्यमिन्द्रियं विषो ॥ ॐ
 न्नादवी ॥ ॐ कथानन्धु ॥ ॐ कर्तुं कर्तव्यं यथा
 मय्या अपभास ॥ समुपहि न जायत ॥ ॐ नाभस्य सुद
 दाहस ॥ सामा यथा पत्ति पत्ति ॥ अन्मन्दवानो विनी
 क्रिया नाचन दिव ॥ ॐ ति आदि आदि ॥ ॐ ॐ

ॐ दमासनै २॥ पुष्प २॥ ॥ ॐ ग
 तानमिन्द ॥ ॐ अग्निर्मूढा ॥ ॐ यमनदहं जितयनमायु
 नगिन्द ॥ ॐ यथमाभूतिवृत्त ॥ गन्धर्वी अस्थाननाम
 गृह्णासूनादध्वं वसवानिगत ॥ ॐ अकदवीनिर्मृतिना
 ववन्धवासीगीवास्तुविचर्य ॥ कनविष्णाम्यायुधानमः
 ध्मादयेतं विरुमद्विपुस्तुतः ॥ नमाह्वयेयदवका ॥ ॐ
 ॐ ममवर्ण ॥ ॐ तववायावृत्तस्यतस्वर्ज्जमातनकु

ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यत्तात्तस्य बोधितनयं च जिह्व ॥ विश्वंतद्भद्रं यदतिदेवाहहृदे मविदधे सुवीराः ॥

॥ अवा एं स्या वृणीमह ॥ ॐ कविर्दगयवमनायचैवि
 यथादा न्यनू प्रवृ विप्रय ॥ ॐ हहया कृणुहि राजना ॥
 नियवाहि ध्यानमडकिं यजनि ॥ ॐ तमीमनै ॥ ॐ गुलि
 यदा विवृकमविष्णुर्गर्भा अदायः ॥ अताधर्मा निधा
 नयन ॥ ॐ वृक्षेणस्पत ॥ ॐ किं ॐ न्यादि ॥ ॥
 ॐ यथेलाकपालस्य ॐ दमासनै २॥ पुष्प २॥ ॥ ॐ ग
 तानमिन्द ॥ ॐ अग्निर्मूढा ॥ ॐ यमनदहं जितयनमायु

ॐ तमीशाने अगतस्तस्थुषस्यातिन्धियजिन्वमवसेहमहेवयम् ॥ पूषानो यथावेदसामसहृषे रक्षितापायुरद्वैतः स्वस्तये ॥

ॐ तमीशाने अगतस्तस्थुषस्यातिन्धियजिन्वमवसेहमहेवयम् ॥ पूषानो यथावेदसामसहृषे रक्षितापायुरद्वैतः स्वस्तये ॥

15
 10
 5
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वायुः शुभः सितः सव
 नमादयस्व पूर्यमाणस्तस्मिन् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वानः पिवतवसावसावावानः पिवताकनिद्धस्तद्वि
 त्सिस्वाहा ॥ दिग् ॥ पुदिग् ॥ आदिग् ॥ विदिग् ॥ उदिग् ॥ अदि
 ग् ॥ स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तच्चरुमग्निर्देवानामरुच
 सुनागमः ॥ अस्य हा पुदिग् ॥ तस्य वाजिस्वाहा कनः ॥
 विनदे पुदेवाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ववा मम स्मर्य सावी ॥ वामस्य हि देवस्य देवतन
 नया धिया वामराजः स्याम ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नावाधिका निनी ॥ तयानुक्त चासुक्त मया गितिनिकालि
 वाकणीहि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

方

[illegible]

स्नाहामासयः स्नाहः मृगुयस्नाहः वरयः स्नाहः सर्वस्व
 नाथस्नाहः आवायुधिवीत्या एतस्नाहः वन्दयस्नाहः सुखा
 यस्नाहः नमिष्यः स्नाहः वसत्यः स्नाहः नृदयः स्नाहः दिः
 मयः स्नाहः मन्त्रः स्नाहः विष्णुः स्नाहः दवयः स्नाहः मूलः
 मयः स्नाहः मखायः स्नाहः वनस्यतिरयः स्नाहः पूष्ययः स्नाहः
 हा रु लेयः स्नाहः मधीयः स्नाहः ॥ ॐ नमो गथा गतयस्तु
 नवाञ्जवाञ्जद्वामह ॥ मखायः नृदयः ॥ ॐ कात्तमिषु

महिना एतद्दिनस्यतिदिर्विन्धपनिष्कृतदिर्व ॥ ॐ सुषु
 ॥ वाञ्जः च आतिवाहसादर्विदातवायववृहस्यतयवाचस्य
 तययैः नञ्जालजः आन्निदिः ॥ प्रवामः कुम्भः स्नाहः
 दीयतयः आवायुधिवीयः ॥ ॐ मयः ॥ ॐ आवा दवासः
 महवामः पययध्वः ॥ आवा दवास आनिवायः स्नाहः
 साहवामह ॥ ॐ अर्कः कर्म कर्म कर्म ॥ सहवाचमयाः रुवा ॥
 दवयः ॥ कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म ॥ ॐ अर्कः कर्म कर्म कर्म

15
 10
 मृगकृपाजापण्याः कृष्णदीवभ्रातृनयाननारंभनकात्मान
 स्वतीमभ्युधेकाइन्वांनान्विनावधनामोवाकाः सीमापो
 वृः अमानास्यात्तमोवायामोः एतत्तुहृत्तुपावर्ध्याः
 स्वाहो लाममसुकोसुवाधोयथाः एतत्तुहृत्तुपावर्ध्याः
 स्वयस्यायवदहद्वृवावामनः॥ ॐ मृगवस्तुमृतावधः मृ
 तुमृतावधः॥ दृग्वृतामधुवृताविनाजानामकामधुवा
 भूदीयमानाः॥ ॐ नात्तु सविदुर्वनः एतस्याविनामाहवृत्तः

5
 समर्तिविवजन्ताः॥ यामस्तुकः अथ इहत्तुपीत्तुत्तु सह
 उधेनापयसामहोगमम्॥ ॐ सवत्सरापनिवत्सरासीदा
 वत्सरासीदत्तमनासिवत्सरासि॥ ॐ सवत्सरापनिवत्सरासीदा
 नागास्तुककल्पनामद्वमासास्तुककल्पनामसास्तुककल्पः
 कामृगवस्तुककल्पनात्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
 सीतावयवसानय॥ सपधुविदसितयादवतयागिनस्वः
 ध्रुवः सीद॥ ॐ अदनाजायकितवृत्तनामादिनवदत्तुत्तुः

15
नाथैकल्यनेहापनायाभिकल्यनमास्तु दायमरास्ता
मृग्यवंगमशुक्रमनकायगमद्यातं द्वाधयागभेविकननेति
कमानडयमिसुतिइष्टमायवनकावाशुवाप्यनरमेलग
॥ ॐ तिमासादि॥ ॥ ॐ अग्निमीड ॥ ॐ स्वस्तिने
ॐ द्या ॥ ॐ पयः॥ ॐ पृथिवी ॥ ॐ विष्णुनाट ॥ ॐ अग्निदेव
ता ॥ ॐ सोः॥ ॐ हकिः॥ ॐ द्येगयावद ॥ ॐ समित ॥ ॐ संकल्प
॥ ॐ सर्वविधावाविष्णुमनसमाना ॥ ॐ वमूर्कमहिसैव

10
माना ॥ ॐ सन्नामनाएंसिसैवतासमुचितायाकन ॥ अ
नयुनीयाविधारवत्तने ॐ वमूर्कयजमानायधहि ॥
सिद्धनमदया ॥ ॐ श्रीगुरु ॥ ॥ ॐ धूवसि ॥ ॐ नजासि ॥
ॐ सोः॥ ॐ कलिनी ॥ ॐ अन्नपक्व ॥ ॐ नमः॥ ॐ यर्धय ॥ ॐ मना
इति॥ ॐ पतिग ॥ ॥ जायका ॥ ॐ उमाविर्तकपुवि
कोशवर्ष दवाधिनाथैवरासनस्त ॥ ॐ पुलहसैव
यादमालं मृग्यजयवपुषामामिनिये ॥ अरुगभादि॥

ॐ नमो यधी सकलगीर्धजलनप्रभुं स्वर्गपञ्चवस्त्र (मलिन
 १५ वृष्यमालं ॥ यस्मिन् युगविषयम् निलिप्तमस्मै तं कुरु नृपि
 निवर्गकिंयुतेन मामि ॥ कलना ॥ ॥ मगुण ॥ ॐ अविस्मय
 वलिद्यासा हनुमांश्च विहीषणः ॥ कपः यं गुणमथु मां मथु मार्कः
 १६ ॥ युयायननमः ॥ ॥ गणेश ॥ ॐ विष्णुश्च नायवी नाय वि
 स्वर्गयायननमः ॥ सर्वविष्णुहनुन्दर्व सर्वगणकिनमाम्यहं
 ॥ ॥ वलि ॥ ॐ निम्नानन्दपर्वणम् निलकलचनिनामः

५ ॥ ॐ यामातीतपर्वणं नृपं स्वर्गपञ्चवस्त्रमाम्यहं ॥ ॥ मगुण ॥
 ॥ ॐ नमस्ककपिलदविनमस्कस्वर्गपञ्चवस्त्रमाम्यहं ॥ यविणीसर्व
 दावेनं प्रजिगीचनमाम्यहं ॥ ॥ कोनानी ॥ ॐ कोमा
 नीमपुनादृष्टा नकागोनकवाससा ॥ ॥ मगुण ॥ ॐ दविपुमृदा
 ॥ ॐ गुणं नृपि नमाम्यहं ॥ ॥ यदयं दविनीलीलपरी ॥
 ॥ ॐ यदिनीयदनामं तु पीलक्ष्मणदवगा ॥ स्वनाधि
 पः नमस्क ॥ कस्यावसतननमः ॥ ॥ नागच ॥ ॐ नाग

15
पाठमन्त्रकानि यः गन्तव्यमस्माद्वलः निम्नगच्छेत्तु विरुद्धाभिः
नागनागा यन्त्रजम् ॥ ॥ १॥ मन्त्रयन्त्रिण ॥ ॐ नमामिदं वदन्
गिरिगन्धर्वमन्त्रं वीनिर्वी ॥ सर्वं पवित्रं रुद्रं पंचगव्यान्धनं च
नै ॥ ॥ ह्रस्वादि ॥ ॐ ॐ ॐ ह्रस्वति ॥ ॥ ॐ नित्यं ॥ ॥
वृक्षाया धूमन ॥ ॐ पानि धीमं वदुर्वाहं वृक्षाणां वदुर्वाहं
हंसयानं वदिव्राणं मन्त्रमालाकमपुत्रं ॥ ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ
मन्त्रानि यन्त्रमूर्तिं मूर्द्धिस्तु न निवासितः ॥ ॥ ह्रस्वकर्माः ॥

5
ह्रस्वकानि यन्त्रमन्त्रं वदुर्वाहं ॥ ॥ ॐ नित्यं ॥ ॥
वृक्षाया धूमन ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥
ह्रस्वकर्माः ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥
ह्रस्वकर्माः ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥

[illegible]

धनैकल्यसक्ती दुष्टयस्तु नयते माजि कर्तुं ॥ स्वैः गम सुमा
वदत नन्द वीर्यं भूयुष्मा निर्वादिष्यताम्मा निर्वादिष्यम
दुनमर्थं वर्षं दधि द्या ॥ ४ ॥ ॐ निलाय ॥ ३ ॥ विः
प्रा नूकं वी श्या निषवा चं जः पार्थिवानि विमनन जाणं
ति ॥ आ ॥ अस्व लाम इह न एं सधस्तु दिव कसा लम् धानुः
गम या विष्णु वं ह्या ॥ ५ ॥ ॐ भू नलाय ॥ ३ ॥ दिवा वा विष्णु
उरु वा दधि द्या म हा वा विष्णु उना नक निदात् ॥ ६ ॥ अहि हस्त

[illegible]

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ जगद्गुरुसाधनविधिर्निश्चयः ॥
 श्रीगुरुदेव नमः वक्राद्यैर्विलिख्य ॥ लाजायुक्तवर्ण ॥ ॐ द
 धिपुष्टवैराग्यं लभ्यते मुददिन ॥ ययः पद्मिनीताः
 रुयं द्युतं वदोक्तवर्ण ॥ ॐ अग्निसर्पिर्गमिन्याह नैऋत्य
 पूष्यराजनी ॥ वायव्यं गमयं स्थाप्य ॐ गमने पुनः गमद
 के ॥ गमयामासुस्तु नाम ॐ मित्रयुद्धधिपुर्वकं ॥ दक्षिणसर्पि
 मयः पुनः दक्षिणायामुपस्थितं ॥ ॐ अथादि ॥ पुनः

मस्काने ॥ न्यासादिकानयन ॥ ॥ मलावलिन्द्यात ॥ ॐ
 भूथेतानहोविद्रुयानालेनदीर्घश्चमिद्रुस्त्वानिस्तु
 ल्यानिहर्षानिस्तुर्लानिहर्षानिस्तुर्लानिहर्षानिस्तु
 ॥ अमृदाभूवाक्षमस्तुवाजापन्या ॥ ४ ॥ मागध ॥ ४ ॥ पुंस्तुलीकि
 गव ॥ ४ ॥ वाभूदाभूवाक्षमस्तुवाजापन्या ॥ ४ ॥ ॐ तिमस्तु
 वलिन्द्या ॥ विसर्जयन् ॥ ॥ पूर्व ॥ ॐ दधिडमापनि
 दचमाय २ ॥ ॐ दधिकोक्ताभूकानिध्वजिष्ठा नक्षत्रावाजि

नमः॥ सुनलिना मूर्खा कनसुख आशुष्यं धिक्का निवृत्त ॥
 दक्षिण ॥ ॐ गम मूर्ध्ववर्द्धि दवताय नमः॥ ॐ गम यन्त्री ॥
 पश्चिम ॥ ॐ दीन सामदवताय २॥ ॐ पयः सुविद्या ॥
 उत्तर ॥ ॐ धृतरासु नदवताय २॥ ॐ गजासि ॥
 आग्नेय ॥ ॐ सदानिवायुलिङ्ग मूर्ध्व २॥ ॐ नमः ॥
 नवाय ॥ ॥ नमः ॥ ॐ धीदवताय दूष्य राजनाय २
 ॥ ॐ धीधुर् ॥ ॥ वायव्य ॥ ॐ गम मया यजुना दनदव

१५
 १०
 ध्यातु ॥ ॐ जनयस्व त्वां संध्यामीदमग्निदिदमग्नीधामयाः
 त्रियं त्वां घर्मासि विष्णुयुतुतुपथं उतुतुपथं त्वां नयतु यतु
 १५
 १०
 वधिं दधिनाक ॥ ॥ दवाग्निं यजमानराग ॥ ॥ त
 नाग्निं यजमानराग ॥ ॥ स्नानं च न सिद्धये यज्ञाय वीरः
 पुष्पधूपदीपादि ॥ ॥ वंदे ॥ ॐ त्रिंशो नामासि त्वधिः
 तिस्रं पितानमस्तु अशुमामाहि ॥ १ ॥ निवर्तयाम्यायु

५
 धनायाय यजननाय नाय स्यायाय सुप्रजात्वाय सुवा
 र्ध्याय ॥ ॥ जायकार्य ॥ ॐ गमय त्विंशं त्रयाय सर्व
 पापप्रणशनी ॥ सर्वदहय विनाय तत्त्वत्रयाय तनमः ॥
 अग्न्यादि ॥ ॥ तत् त्विंशं त्रयाय सर्वपापप्रणशनी ॥
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००

निष्ठायाता ३

सुभाष्टाय तर्वा वा क आष्टाय तर्वा वा क सुभाष्टाय तर्वा वा क सुभाष्टाय तर्वा वा क
 आष्टाय तर्वा वा क आष्टाय तर्वा वा क आष्टाय तर्वा वा क ॥ यदुक्तं यदा स्ति तर्वा
 आष्टाय तर्वा वा क आष्टाय तर्वा वा क आष्टाय तर्वा वा क आष्टाय तर्वा वा क
 मेन १ हि १ सी १ ॥ ॥ अष्टाय तर्वा वा क ॥ ॥ अष्टाय तर्वा वा क ॥ ॥
 अष्टाय तर्वा वा क अष्टाय तर्वा वा क अष्टाय तर्वा वा क अष्टाय तर्वा वा क ॥
 अष्टाय तर्वा वा क अष्टाय तर्वा वा क अष्टाय तर्वा वा क अष्टाय तर्वा वा क ॥ ॥ ॥ ॥

१८ तापीत सुरार्पुनमधुलपयैल्लिखित्वा ॥ विष्णुजनं भूया
त ॥ ॥ दक्षो विहिः ॥ ॐ भक्तिकाय हिया मुमूर्त्यनमः ॥
ॐ वीहय धुम ॥ ॥ वामलाजा ॥ ॐ पूष्टिकाय विष्णु
हय २ ॥ ॐ ॐ दीविष्णु ॥ ॥ मरुत्सुसमार्जनी ॥ ॐ स
र्वानिष्टविनाशाय वसुदेवनमः ॥ ॐ वसुदेव स्तुत ॥
वीहिकयन ॥ ॐ वीहय धुम ॥ ॥ लाजा दयन ॥ ॐ त्र
स्तुन ॐ ॥ ॥ अश्वार्थ वामहस्तन अर्धपादौ मि

वीचगृहीत्वा दक्षिणहस्तनसम्पार्कन्या सम्पार्कनं ॥ दक्षि
 भवर्त्तनमूलकलभगपथ्योर्नंगर्कन ॥ ॐ वायुवायाहि
 वीतयेद्युतानाहवादातय ॥ पत्रि(भ)नूदस्यधामसू ॥ ॥
 (गममयलिङ्गआग्नेयका(ग)स्काष्ट ॥ सम्पार्कनीकल
 म(य)निधाय ॥ ॥ ततः (गममयलिङ्गस्तिनासनपूजा
 ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ तिस्रधुपालंरुनं ॥ ॥ ॐ ॥

रत्नवमकयश्चरगवासाधनविधिलिखित ॥ ॥ ॐ अथा
 दि ॥ सुनूनमस्कारं ॥ न्यासः ॥ ॥ ॐ कौं हृदयादिषु (अ
 ष) ॥ अथ (अ)भर्त्तया वपूजात्मपूजाच ॥ ॐ आपाभूस्मान् ॥
 ॥ ॥ यत्पुम(गममय ॥ पूजनं ॥ ॐ कौं लं सथाजागायने
 मः ॥ ॐ गन्धद्वारा ॥ ॥ उत्तरागमपूजा ॥ ॐ कौं वं वासद
 वायनमः ॥ ॐ गमययी ॥ ॥ दक्षि(व) ॥ द्युतं ॥ ॐ कौं नं अ
 चागायनमः ॥ ॐ तजासि ॥ ॥ पूर्व ॥ दधि ॥ ॐ कौं यं

15
 10
 लुनूवायनमः॥ ॐ दधिकावा ॥ ॥ म (अं) दान ॥ ॐ
 दं ॐ गमनायनमः॥ ॐ ययः पृथिव्या ॥ ॥ अ (अं) ॥
 (गमय) लिंग ॥ ॐ अद्यानमूलमं ॥ ॐ नमः ॥ गिरिवाय
 ॥ ॥ सकलतां (गमलमून) ॥ पूजायादाकथनं ॥ सर्व
 गमयशुद्धिदं ध्या ॥ आवाहनं ॥ ॐ समुपासिमामा ॥
 ॐ जनयत्येता ॥ पूजा ॥ ॐ निर्मलं कानूपाय वन्दे
 ननिवर्तते ॥ पुष्करपापपूसाच विनिर्गवैरूपिणी ॥ पञ्च
 क

5
 गगार्चनविधिरुत्सर्वं विधिपनिपूर्वमसु ॥ ॥ गिरिग
 ॥ दवाग्नि यजमान ॥ ॥ निवर्त्त पूजायाय ॥ चन्दना
 दियस्तपवीर ॥ वंद ॥ ॐ निवानामासि ॥ सयाजातादि
 पञ्च ॥ ॥ स्तुत ॥ ॐ नमः ॥ गिरिवाय ॥ ॐ निगमय
 लिंगमर्चनं ॥ ॥ नमः ॥ यजमान ॥ ॥ यजमान ॥
 ॐ वाचकं पुन्धामि ॥ ३ ॥ ॐ मनसु आयायता ॥ ३ ॥ आ
 वस्य ॥ सर्वे वसु सिं वयन् ॥ ॐ त्वमग्ने ॥ ॐ निमिवमगपेव

ॐ शुद्धं भक्तवत्सलं सादयन् सर्वरूपकीं ध्वनं मानन्दं
 सूत्रनायकं चरणवान् सर्वपूर्वकामपदं वागीशं वन्दस्म
 वाग्वपदावामादिकीं ध्वनां व्याधिं कविनामकं कृतं य
 हामृतं यथा हि मां ॥ मृत्युञ्जय या ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ पूर्वदक्षिणपश्चिमाह्वयसर्गसर्वानमावास्यातान् दक्षिणं व
 द्दक्षिणं हनुमद्वन्द्यनाथदय ॥ भगवन् ध्वनमादिदवसर्ग
 लोकादिइहवापहं निर्यानन्दमयं नमामि नित्यं सावल्यादिपूजादि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१ कृतसतयः भक्तः ॥ निमलुयं कुर्वन् विष्णुं इर्धा कनिकर्तुं लोके ॥
 निवानयत् सर्वदायाः ॥ यः श्रीपूजवर्द्धनं ॥ स्नानार्थं गुणवद
 तां पूजाविष्णुनिवानय ॥ सिद्धिलक्ष्मीसमापन्नं सर्वविघ्नह
 रं गुरुं ॥ धनं धनं धनं ॥ तय पाठ रुना ॥ ॥ ॥

हरननिद्रादभमपानि ॥

पान्द्रयो

ॐ ह्रीं

नानायध

ॐ दीविभूः ॥

सदाशिव

नमोभिरुवो ॥

कादिनाम

गणस्था ॥

मलिद्रमान

ॐ मभमवद्रा

धर्मेन्द्रधन

रुद्रागना ॥

अलिमद्रकभाव शीथिपदा

मानरुनव

असंरयुता

मानभदनी

हिनंयवधुर्

गणधरा

गणनीचा

कमान

यशवात्मः

शिरवननायधरा हरनगार्ध

आर्यावलोकितभवन

ॐ नुश्यावि

मीननाथ

पुजायनेन

शीमनराधन

नमोभिरुव

दृष्टधन

नमोभिरुव

कामति

नमोभिरुव

पीवाग्नि

अग्निभिरुव

वल्लभ

प्रीति ॥

धमकारीम

हरनगार्ध

धमतिरेन

ममोभिरुव

भिरुवमुल

धमोभिरुव

पशुपति

पानरुद्र

गुह्यधनी

समरुद्रा

वगुननायध

ॐ दीविभूः

वगलेक

उद्भुत्ता

पुत्रसि

ॐ मभ

धृष्टदव

समरुद्रा

गणधरा

गणनीचा

कायुदव

जातवदस

कुसा

नमोभिरुव

नव

असंरयुता

नवधन

पानरुद्र

ॐ ह्रीं

असंरयुद्वि

हरिनी

पदगना

रुनेमन

गिज्ञानया

दामादन

विभानेना

प्रीधननागी

सहस्रगी

दृष्टलेकी

प्रीति

दृष्टमद

विभानेना

धृष्टलेकी

विभानेना

धृष्टलेकी

विभानेना

अथ ब्रह्मणो वितीय प्रह लक्ष्मि गायत्री त्रयोदश